जून 2023

G20 भारत 2023 INDIA

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

नि-क्षय मित्र

टीबी मुक्त भारत के लिए जन भागीदारी

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश 1

02 आवरण कथा

2.1 टीबी के खिलाफ़ भारत की लड़ाई में अग्रणी नि-क्षय मित्र 28

03 संक्षिप्त में

3.1 **चक्रवात बिपरजॉय** : भारत का उल्लेखनीय आपदा प्रबन्धन 16

3.2 हमारी नीली जीवन रेखा का संरक्षण : **जल संरक्षण** का मार्ग 24

3.3 **मियावाकी विधि** : भारत के हरित आवरण का विस्तार 38

3.4 **श्वेत क्रांति 2.0** का गवाह बन रहा बारामूला 46

3.5 आरम्भ से सुर्खियों तक : **वैश्विक मंच पर भारतीय खेल** 48

3.6 **कुट्टी कहानी** : 'मन की बात' से प्रेरित स्टोरीटेलिंग का अनोखा उद्यम 58

04 लेख व साक्षात्कार

4.1 अनुक्रिया से तैयारी तक : आपदा प्रबन्धन के प्रति भारत का परिवर्तनकारी दृष्टिकोण - लेफ्टिनेंट जनरल सैयद अता हसनैन (सेवानिवृत्त) 20

4.2 आंतरिक क्षमता और शक्ति का निर्माण - राज कुमार 22

4.3 जन भागीदारी और अपनेपन की भावना : नि-क्षय मित्र - दीपा मलिक 34

4.4 मियावाकी वन : सतत भविष्य की परिकल्पना - दीपेन जैन और आर. के. नायर 42

4.5 भारतीय हॉकी : परिवर्तन, विजय और गौरवशाली भविष्य की यात्रा - दिलीप टिर्की 52

4.6 कुट्टी कहानी : युवा दर्शकों के लिए भारतीय लोककथाओं को पुनर्जीवित करने की पहल - आनंदा शंकर जयंत 60

05 तस्वीरों में

5.1 जगन्नाथ पुरी रथ यात्रा 54

5.2 आपातकाल की गाथा 56

06 प्रतिक्रियाएँ 62

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो! नमस्कार

'मन की बात' में एक बार फिर आप सब का स्वागत है। ऐसे तो 'मन की बात' हर महीने के आखिरी रविवार को होता है, लेकिन इस बार एक सप्ताह पहले ही हो रहा है। आप सब जानते ही हैं, अगले हफ्ते मैं अमरीका में रहूँगा और वहाँ बहुत सारी भाग-दौड़ भी रहेगी और इसलिए मैंने सोचा, वहाँ जाने से पहले आपसे बात कर लूँ और इससे बढ़िया क्या होगा? जनता-जनार्दन का आशीर्वाद, आपकी प्रेरणा, मेरी ऊर्जा भी बढ़ती रहेगी।

साथियो, बहुत से लोग कहते हैं कि प्रधानमंत्री के तौर पर मैंने ये अच्छा काम किया, वो बड़ा काम किया। 'मन की बात' के कितने ही श्रोता, अपनी चिट्ठियों में बहुत सारी प्रशंसा करते हैं। कोई कहता है ये किया, कोई कहता है वो किया, ये अच्छा किया, ये ज़्यादा अच्छा किया, ये बढ़िया किया, लेकिन मैं जब भारत के सामान्य मानवी के प्रयास, उनकी मेहनत, उनकी इच्छाशक्ति को देखता हूँ, तो खुद अपने-आप अभिभूत हो जाता हूँ। बड़े से बड़ा लक्ष्य हो, कठिन-से-कठिन चुनौती हो, भारत के लोगों का सामूहिक बल, सामूहिक शक्ति, हर चुनौती का हल निकाल देता है। अभी हमने दो-तीन दिन पहले देखा कि देश के पश्चिमी छोर पर कितना बड़ा साइक्लोन आया। तेज़ चलने वाली हवाएँ, तेज़ बारिश। **साइक्लोन बिपरजॉय ने कच्छ में कितना कुछ तहस-नहस कर दिया, लेकिन कच्छ के लोगों ने जिस हिम्मत और तैयारी के साथ इतने खतरनाक साइक्लोन का मुक़ाबला किया, वो भी उतना ही अभूतपूर्व है।** दो दिन बाद ही कच्छ के लोग अपना नया वर्ष, यानी आषाढ़ी बीज भी मनाने जा रहे हैं। ये भी संयोग है कि आषाढ़ी बीज कच्छ में वर्षा की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। मैं इतने साल कच्छ आता-जाता रहा हूँ, वहाँ के लोगों की सेवा करने का मुझे सौभाग्य भी मिला है और इसके लिए कच्छ के लोगों का हौसला और उनकी जिजीविषा के बारे मैं अच्छी तरह जानता हूँ। दो दशक पहले के विनाशकारी भूकम्प के बाद जिस कच्छ के बारे में कहा जाता था कि वो कभी उठ नहीं पाएगा, आज वही ज़िला देश के तेज़ी से विकसित होते ज़िलों में से एक है।

मुझे विश्वास है, साइक्लोन बिपरजॉय ने जो तबाही मचाई है, उससे भी कच्छ के लोग बहुत तेज़ी से उभर जाएँगे।

साथियो, प्राकृतिक आपदाओं पर किसी का ज़ोर नहीं होता, लेकिन बीते वर्षों में भारत ने आपदा प्रबन्धन की जो ताकत विकसित की है, वो आज एक उदाहरण बन रही है। प्राकृतिक आपदाओं से मुकाबला करने का एक बड़ा तरीका है – प्रकृति का संरक्षण। आजकल मानसून के समय में तो इस दिशा में हमारी ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। इसीलिए ही आज देश 'कैच द रेन' जैसे अभियानों के जरिए सामूहिक प्रयास कर रहा है। पिछले महीने 'मन की बात' में ही हमने जल संरक्षण से जुड़े स्टार्टअप्स की चर्चा की थी। इस बार भी मुझे चिट्ठी लिखकर कई ऐसे लोगों के बारे में बताया गया है, जो पानी की एक-एक बूँद बचाने के लिए जी-जान से लगे हैं। **ऐसे ही एक साथी हैं, यूपी के बांदा ज़िले के तुलसीराम यादव जी। तुलसीराम यादव जी लुकतरा ग्राम पंचायत के प्रधान हैं।** आप भी जानते हैं कि बांदा और बुंदेलखंड क्षेत्र में पानी को लेकर कितनी कठिनाइयाँ रही हैं। इस चुनौती से पार पाने के लिए तुलसीराम जी ने गाँव के लोगों को साथ लेकर इलाके में 40 से ज़्यादा तालाब बनवाए हैं। तुलसीराम जी ने अपनी मुहिम का आधार बनाया है– खेत का पानी खेत में, गाँव का पानी गाँव में। आज उनकी मेहनत का ही नतीजा है कि उनके गाँव में भू-जल स्तर सुधर रहा है। **ऐसे ही यू.पी. के हापुड़ ज़िले में लोगों ने मिलकर के एक विलुप्त नदी को पुनर्जीवित किया है।** यहाँ काफी समय पहले नीम नाम की एक नदी हुआ करती थी। समय के साथ वो लुप्त हो गई, लेकिन स्थानीय स्मृतियाँ और जन-कथाओं में उसे हमेशा याद किया जाता रहा। आखिरकार, लोगों ने अपनी इस प्राकृतिक धरोहर को

प्राकृतिक संरक्षण से करें प्राकृतिक आपदाओं का मुकाबला

फिर से सजीव करने की ठानी। **लोगों के सामूहिक प्रयास से अब 'नीम नदी' फिर से जीवंत होने लगी है। नदी के उद्गम स्थल को अमृत सरोवर के तौर भी विकसित किया जा रहा है।**

साथियो, ये नदी, नहर, सरोवर, ये केवल जल-स्रोत ही नहीं होते हैं, बल्कि इनसे जीवन के रंग और भावनाएँ भी जुड़ी होती हैं। ऐसा ही एक दृश्य अभी कुछ ही दिन पहले महाराष्ट्र में देखने को मिला। ये इलाका ज़्यादातर सूखे की चपेट में रहता है। **पाँच दशक के इंतजार के बाद यहाँ निलवंडे डैम की कैनाल का काम अब पूरा हो रहा है। कुछ दिन पहले टेस्टिंग के दौरान कैनाल में पानी छोड़ा गया था। इस दौरान जो तस्वीरें आईं, वो वाकई भावुक करने वाली थीं। गाँव के लोग ऐसे झूम रहे थे, जैसे होली-दीवाली का त्योहार हो।**

साथियो, जब प्रबन्धन की बात हो रही है, तो मैं आज छत्रपति शिवाजी महाराज को भी याद करूँगा। छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता के साथ ही उनकी गवर्नमेंट और उनके प्रबन्ध कौशल से भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है, विशेषकर जल-प्रबन्धन और नौसेना को लेकर छत्रपति शिवाजी महाराज ने जो कार्य किए, वो आज भी भारतीय इतिहास का गौरव बढ़ाते हैं। उनके बनाए जलदुर्ग इतनी शताब्दियों बाद भी समन्दर के बीच में आज भी शान से खड़े हैं। इस महीने की शुरुआत में ही छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के 350 वर्ष पूरे हुए हैं। इस अवसर को एक बड़े पर्व के रूप में मनाया जा रहा है। इस दौरान महाराष्ट्र के रायगढ़ किले में इससे जुड़े भव्य कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

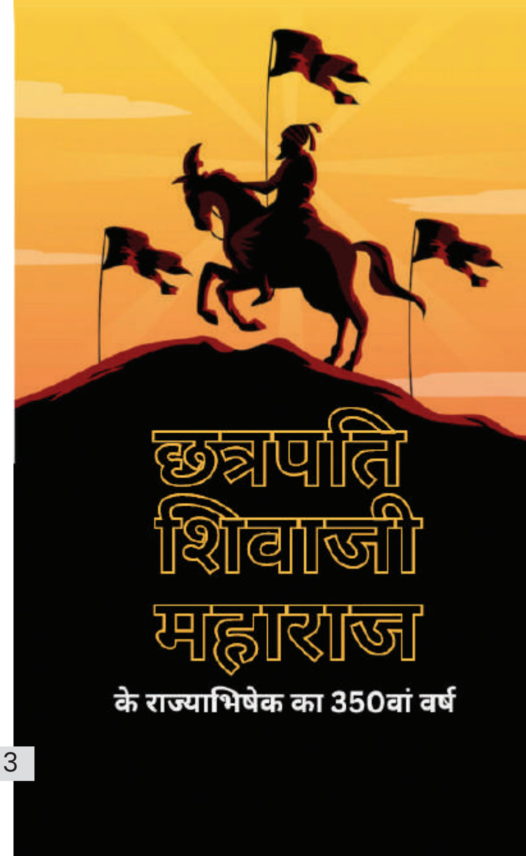

मुझे याद है, कई वर्ष पहले 2014 में मुझे रायगढ़ जाने, उस पवित्र भूमि को नमन करने का सौभाग्य मिला था। **यह हम सबका कर्त्तव्य है कि इस अवसर पर हम छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रबन्ध कौशल को जानें, उनसे सीखें। इससे हमारे भीतर हमारी विरासत पर गर्व का बोध भी जगेगा और भविष्य के लिए कर्तव्यों की प्रेरणा भी मिलेगी।**

मेरे प्यारे देशवासियो, आपने रामायण की उस नन्हीं गिलहरी के बारे में ज़रूर सुना होगा, जो रामसेतु बनाने में मदद करने के लिए आगे आई थी। कहने का मतलब ये कि जब नीयत साफ़ हो, प्रयासों में ईमानदारी हो, तो फिर कोई भी लक्ष्य कठिन नहीं रहता। भारत भी आज इसी नेक नीयत से एक बहुत बड़ी चुनौती का मुकाबला कर रहा है। ये चुनौती है– टीबी की, जिसे क्षय रोग भी कहा जाता है। भारत ने संकल्प किया है 2025 तक टीबी मुक्त भारत, बनाने का– लक्ष्य बहुत बड़ा ज़रूर है। एक समय था, जब टीबी का पता चलने के बाद परिवार के लोग ही दूर हो जाते थे, लेकिन ये आज का समय है, जब टीबी के मरीज़ को परिवार का सदस्य बनाकर उनकी मदद की जा रही है। **इस क्षय रोग को जड़ से समाप्त करने के लिए नि-क्षय मित्रों ने मोर्चा सम्भाल लिया है। देश में बहुत बड़ी संख्या में विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ नि-क्षय मित्र बनी हैं। गाँव-देहात में, पंचायतों में, हज़ारों लोगों ने खुद आगे आकर टीबी मरीज़ों को गोद लिया है। कितने ही बच्चे हैं, जो टीबी मरीज़ों की मदद के लिए आगे आए हैं। ये जन-भागीदारी ही इस अभियान की सबसे बड़ी ताकत है। इसी भागीदारी की वजह से आज देश में 10 लाख से ज़्यादा टीबी मरीज़ों को गोद लिया जा चुका है और ये पुण्य का काम किया है, क़रीब-क़रीब 85 हज़ार नि-क्षय मित्रों ने। मुझे ख़ुशी है कि देश के कई सरपंचों ने, ग्राम प्रधानों ने भी ये बीड़ा उठा लिया है कि वो अपने गाँव में टीबी को समाप्त करके ही रहेंगे।**

नैनीताल के एक गाँव के नि-क्षय मित्र श्रीमान दीकर सिंह मेवाड़ी जी ने टीबी के छह मरीज़ों को गोद लिया है। ऐसे ही किन्नौर की एक ग्राम पंचायत के प्रधान नि-क्षय मित्र श्रीमान ज्ञान सिंह जी भी अपने ब्लॉक में टीबी मरीज़ों को हर ज़रूरी सहायता उपलब्ध कराने में जुटे हैं। भारत को टीबी मुक्त बनाने की मुहिम में हमारे बच्चे और युवा साथी भी पीछे नहीं हैं। हिमाचल प्रदेश के ऊना की 7 साल की बेटी नलिनी सिंह का कमाल देखिए। बिटिया नलिनी अपनी पॉकेट मनी से टीबी मरीज़ों की मदद कर रही है। आप जानते हैं कि बच्चों को गुल्लक से कितना प्यार होता है, लेकिन MP के कटनी ज़िले की 13 साल की मीनाक्षी और पश्चिम बंगाल के डायमंड हार्बर के 11 साल के बश्वर मुखर्जी, दोनों ही कुछ अलग ही बच्चे हैं। इन दोनों बच्चों ने अपने गुल्लक के पैसे भी टीबी मुक्त भारत के अभियान में लगा दिए हैं। **ये सभी उदाहरण भावुकता से भरे होने के साथ ही बहुत प्रेरक भी हैं। कम उम्र में बड़ी सोच रखने वाले इन सभी बच्चों की मैं हृदय से प्रशंसा करता हूँ।**

मेरे प्यारे देशवासियो, हम भारतवासियों का स्वभाव होता है कि हम हमेशा नए विचारों के स्वागत के लिए तैयार रहते हैं। हम अपनी चीज़ों से प्रेम करते हैं और नई चीज़ों को आत्मसात भी करते हैं। **इसी का एक उदाहरण है– जापान की तकनीक मियावाकी।**

अगर किसी जगह की मिट्टी उपजाऊ नहीं रही हो, तो मियावाकी तकनीक उस क्षेत्र को फिर से हरा-भरा करने का बहुत अच्छा तरीका होती है। मियावाकी जंगल तेज़ी से फैलते हैं और दो-तीन दशक में जैव विविधता का केंद्र बन जाते हैं। अब इसका प्रसार बहुत तेज़ी से भारत के भी अलग-अलग हिस्सों में हो रहा है। हमारे यहाँ केरला के एक टीचर श्रीमान राफ़ी रामनाथ जी ने इस तकनीक से एक इलाके की तस्वीर ही बदल दी। दरअसल, रामनाथ जी अपने स्टूडेंट्स को प्रकृति और पर्यावरण के बारे में गहराई से समझाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने एक हर्बल गार्डन ही बना डाला। उनका ये गार्डन अब एक बायोडायवर्सिटी जोन बन चुका है। उनकी इस कामयाबी ने उन्हें और भी प्रेरणा दी। इसके बाद राफ़ी जी ने मियावाकी तकनीक से एक मिनी फारेस्ट, यानी छोटा जंगल और इसे नाम दिया– 'विद्यावनम्'। अब इतना खूबसूरत नाम तो एक शिक्षक ही रख सकता है– 'विद्यावनम्'। रामनाथ जी के इस 'विद्यावनम्' में छोटी सी जगह में 115 वेरायटीज़ के 450 से अधिक पेड़ लगाए गए। उनके स्टूडेंट्स भी इनके रखरखाव में उनका हाथ बँटाते हैं। इस खूबसूरत जगह को देखने के लिए आस-पास के स्कूली बच्चे, आम नागरिक काफ़ी भीड़ उमड़ती है। मियावाकी जंगलों को किसी भी जगह, यहाँ तक कि शहरों में भी आसानी से उगाया जा सकता है। कुछ समय पहले ही मैंने गुजरात में केवड़िया, एकता नगर में मियावाकी फारेस्ट का उद्घाटन किया था। कच्छ में भी 2001 के भूकम्प में मारे गए लोगों की याद में मियावाकी पद्धति से स्मृति वन बनाया गया है। कच्छ जैसी जगह पर इसका सफल होना ये बताता है कि मुश्किल से मुश्किल प्राकृतिक परिवेश में भी ये तकनीक कितनी प्रभावी है। इसी तरह अम्बाजी और पावागढ़ में भी मियावाकी मेथड से पौधे लगाए गए हैं। मुझे पता चला है कि लखनऊ के अलीगंज में भी एक मियावाकी उद्यान

तैयार किया जा रहा है। पिछले चार साल में मुम्बई और उसके आस-पास के इलाकों में ऐसे 60 से ज़्यादा जंगलों पर काम किया गया है। अब तो ये तकनीक पूरी दुनिया में पसंद की जा रही है। सिंगापुर, पेरिस, ऑस्ट्रेलिया, मलेशिया जैसे कितने ही देशों में इसका बड़े पैमाने पर उपयोग हो रहा है। **मैं देशवासियों से, खासकर, शहरों में रहने वाले लोगों से आग्रह करूँगा कि वे मियावाकी पद्धति के बारे में ज़रूर जानने का प्रयास करें। इसके ज़रिए आप अपनी धरती और प्रकृति को हरा-भरा और स्वच्छ बनाने में अमूल्य योगदान दे सकते हैं।**

मेरे प्यारे देशवासियो, आजकल हमारे देश में जम्मू-कश्मीर की खूब चर्चा होती है। कभी बढ़ते पर्यटन के कारण, तो कभी G20 के शानदार आयोजनों के कारण। कुछ समय पहले मैंने 'मन की बात' में आपको बताया था कि कैसे कश्मीर के 'नादरू' देश के बाहर भी पसंद किए जा रहे हैं। अब जम्मू-कश्मीर के बारामूला ज़िले के लोगों ने एक कमाल कर दिखाया है। बारामूला में खेती-बाड़ी तो काफ़ी समय से होती है, लेकिन यहाँ दूध की कमी रहती थी। बारामूला के लोगों ने इस चुनौती को एक अवसर के रूप में लिया। यहाँ बड़ी संख्या में लोगों ने डेयरी का काम शुरू किया। इस काम में सबसे आगे यहाँ की महिलाएँ आईं, जैसे कि एक बहन हैं– इशरत नबी। इशरत, ग्रेजुएट हैं और इन्होंने 'मीर सिस्टर्स डेयरी फार्म' शुरू किया है। उनके डेयरी फार्म से हर दिन करीब डेढ़-सौ लीटर दूध की बिक्री हो रही है। ऐसे ही सोपोर के एक साथी हैं - वसीम अनायत। वसीम के पास दो दर्जन से ज़्यादा पशु हैं और वो हर दिन दो-सौ लीटर से ज़्यादा दूध बेचते हैं। एक और युवा आबिद हुसैन भी डेयरी का काम कर रहे हैं। इनका काम भी खूब आगे बढ़ रहा है। ऐसे लोगों की मेहनत की वजह से ही आज बारामूला में हर रोज साढ़े 5 लाख लीटर दूध उत्पादन हो रहा है। **पूरा बारामूला, एक नई श्वेत क्रांति की पहचान बन रहा है। पिछले ढाई-तीन वर्षों में यहाँ 500 से ज़्यादा डेयरी यूनिट**

लगी हैं। बारामूला की डेयरी इंडस्ट्री इस बात की गवाह है कि हमारे देश का हर हिस्सा कितनी सम्भावनाओं से भरा हुआ है। किसी क्षेत्र के लोगों की सामूहिक इच्छाशक्ति कोई भी लक्ष्य प्राप्त करके दिखा सकती है।

मेरे प्यारे देशवासियो, इसी महीने खेल जगत से भारत के लिए कई बड़ी खुशखबरी आई हैं। भारत की टीम ने पहली बार वीमेन्स जूनियर एशिया कप जीतकर तिरंगे की शान बढ़ाई है। इसी महीने हमारी मैन हॉकी टीम ने भी जूनियर एशिया कप जीता है। इसके साथ ही हम इस टूर्नामेंट के इतिहास में सबसे अधिक जीत दर्ज करने वाली टीम भी बन गए हैं। जूनियर शूटिंग वर्ल्ड कप, उसमें भी हमारी जूनियर टीम ने भी कमाल कर दिया। भारतीय टीम ने इस टूर्नामेंट में पहला स्थान हासिल किया है। इस टूर्नामेंट में कुल जितने गोल्ड मेडल्स थे, उसमें से 20 प्रतिशत अकेले भारत के खाते में आए हैं। इसी जून में एशियाई अंडर ट्वेंटी एथलेटिक्स चैम्पियनशिप भी हुई। इसमें भारत पदक तालिका में 45 देशों में टॉप तीन में रहा।

साथियो, पहले एक समय होता था, जब हमें अन्तरराष्ट्रीय आयोजनों के बारे में पता तो चलता था, लेकिन उनमें अक्सर भारत का कहीं कोई नाम नहीं होता था, लेकिन आज मैं केवल पिछले कुछ सप्ताह की सफलताओं का ज़िक्र कर रहा हूँ, तो भी लिस्ट इतनी लम्बी हो जाती है। यही हमारे युवाओं की असली ताकत है। ऐसे कितने ही खेल और प्रतियोगिताएँ हैं, जहाँ आज भारत पहली बार अपनी मौजूदगी दर्ज करवा रहा है, जैसे कि लॉन्ग जम्प में श्रीशंकर मुरली ने पेरिस डायमंड लीग जैसे प्रतिष्ठित आयोजन में देश को ब्रोंज़ दिलाया है। ये इस प्रतियोगिता में भारत का पहला

महिमा सिद्ध करती भारत की खेल संस्कृति

मेडल है। ऐसे ही एक सफलता हमारी अंडर सेवेन्टिन वीमेन रेसलिंग टीम ने किर्गिस्तान में भी दर्ज की है। **मैं देश के इन सभी एथलिट्स, उनके पेरेंट्स और कोचेज़, सबको उनके प्रयासों के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।**

साथियो, इंटरनेशनल आयोजनों में देश की इस सफलता के पीछे राष्ट्रीय स्तर पर हमारे खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत होती है। आज देश के अलग-अलग राज्यों में एक नए उत्साह के साथ खेलों के आयोजन होते हैं। इनसे खिलाड़ियों को खेलने, जीतने और हार से सीखने का मौका मिलता है, जैसे अभी उत्तर प्रदेश में खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स का आयोजन हुआ। इसमें युवाओं में खूब उत्साह और जोश देखने को मिला। इन खेलों में हमारे युवाओं ने ग्यारह रिकॉर्ड तोड़े हैं। इन खेलों में पंजाब यूनिवर्सिटी, अमृतसर की गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी और कर्नाटका की जैन यूनिवर्सिटी, मैडल टेली में पहले तीन स्थानों पर रही हैं।

साथियो, ऐसे टूर्नामेंट्स का एक बड़ा पहलू यह भी होता है कि इनसे युवा खिलाड़ियों की कई इन्स्पायरिंग स्टोरीज़ भी सामने आती हैं। खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में रोइंग स्पर्धा में असम की कॉटन यूनिवर्सिटी के अन्यतम राजकुमार ऐसे पहले दिव्यांग खिलाड़ी बने, जिन्होंने इसमें हिस्सा लिया। बरकतुल्लाह यूनिवर्सिटी की निधि पवैया घुटने में गम्भीर चोट के बावजूद शॉट-पूट में गोल्ड मैडल जीतने में कामयाब रही। सावित्रीबाई फुले पुणे यूनिवर्सिटी के शुभम भंडारे को एंकल इंजरी के चलते पिछले साल बेंगलुरु में निराशा हाथ लगी थी, लेकिन इस बार वे स्टीपलचेज़ के गोल्ड मेडलिस्ट बने हैं। बर्दवान यूनिवर्सिटी की सरस्वती कुंडू अपनी कबड्डी टीम की कप्तान हैं। वे कई मुश्किलों को पार कर यहाँ तक पहुँची हैं। **बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले बहुत सारे एथलिट्स को टॉप्स स्कीम से भी बहुत मदद मिल रही है। हमारे खिलाड़ी जितना खेलेंगे, उतना ही खिलेंगे।**

मेरे प्यारे देशवासियो, 21 जून भी अब आ ही गई है। इस बार भी विश्व के कोने-कोने में लोग अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का उत्सुकता से इंतज़ार कर रहे हैं। इस वर्ष योग दिवस की थीम है– योग फॉर वसुधैव कुटुम्बकम् यानी ‘एक विश्व-एक परिवार’ के रूप में सबके कल्याण के लिए योग। यह योग की उस भावना को व्यक्त करता है, जो सबको जोड़ने वाली और साथ लेकर चलने वाली है। हर बार की तरह इस बार भी देश के कोने-कोने में योग से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे।

साथियो, इस बार मुझे न्यूयॉर्क के संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय, UN में होने वाले योग दिवस कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिलेगा। मैं देख रहा हूँ कि सोशल मीडिया पर भी योग दिवस को लेकर गज़ब का उत्साह दिख रहा है।

साथियो, मेरा आप सभी से आग्रह है कि आप योग को अपने जीवन में ज़रूर अपनाएँ, इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएँ। अगर अब भी आप योग से नहीं जुड़े हैं तो आने वाली 21 जून, इस संकल्प के लिए बहुत बेहतरीन मौका है। योग में तो वैसे भी ज़्यादा तामझाम की ज़रूरत ही नहीं होती है। देखिए, जब आप योग से जुड़ेंगे तो आपके जीवन में कितना बड़ा परिवर्तन आएगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, परसों यानी 20 जून को ऐतिहासिक रथयात्रा का दिन है। रथयात्रा की पूरी दुनिया में एक विशिष्ट पहचान है। देश के अलग-अलग राज्यों में बहुत धूमधाम से भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा निकाली जाती है। ओडिशा के पुरी में होने वाली रथयात्रा तो अपने आपमें अद्भुत होती है। जब मैं गुजरात में था, तो मुझे अहमदाबाद में होने वाली विशाल रथयात्रा में शामिल होने का अवसर मिलता था। इन रथयात्राओं में जिस तरह देश भर के हर समाज, हर वर्ग के लोग उमड़ते हैं, वो अपने आपमें बहुत अनुकरणीय है। **ये आस्था के साथ ही ‘एक भारत-श्रेष्ठ भारत’ का भी प्रतिबिम्ब होती है। इस पावन-पुनीत अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। मेरी कामना है, भगवान जगन्नाथ सभी देशवासियों को अच्छे स्वास्थ्य और**

वसुधैव कुटुम्बकम् के लिए योग

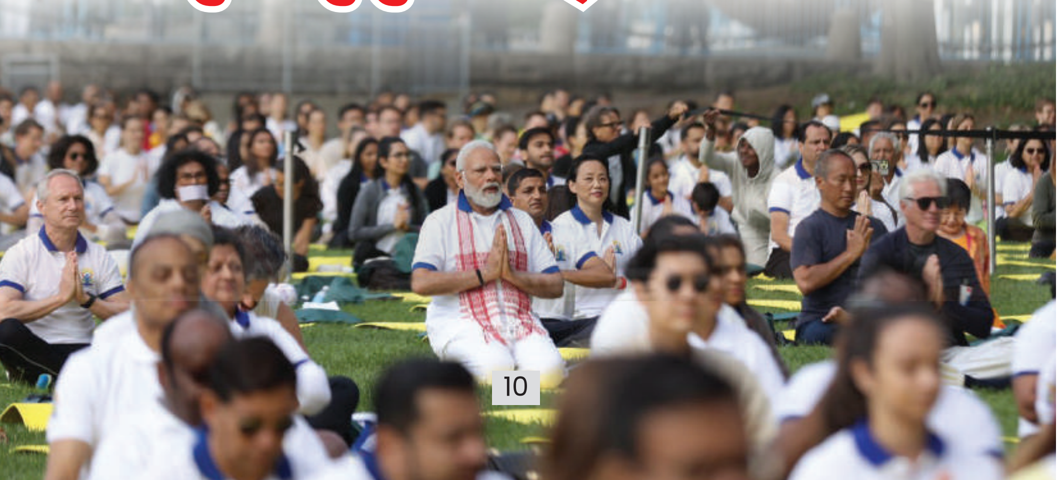

सुख-समृद्धि का आशीर्वाद प्रदान करें।

साथियो, भारतीय परम्परा और संस्कृति से जुड़े उत्सव की चर्चा करते हुए मैं देश के राजभवनों में हुए दिलचस्प आयोजनों का भी ज़रूर उल्लेख करूँगा। अब देश में राजभवनों की पहचान सामाजिक और विकास कार्यों से होने लगी है। आज हमारे राजभवन टीबी मुक्त भारत अभियान के, प्राकृतिक खेती से जुड़े अभियान के ध्वजवाहक बन रहे हैं। बीते समय में गुजरात हो, गोवा हो, तेलंगाना हो, महाराष्ट्र हो, सिक्किम हो, इनके स्थापना दिवस को अलग-अलग राजभवनों ने जिस उत्साह के साथ सेलिब्रेट किया, वह अपने आप में एक मिसाल है। यह एक बेहतरीन पहल है, जो ‘एक भारत-श्रेष्ठ भारत’ की भावना को सशक्त बनाती है।

साथियो, भारत लोकतंत्र की जननी है, मदर ऑफ़ डेमोक्रेसी है। हम अपने लोकतांत्रिक आदर्शों को सर्वोपरि मानते हैं, अपने संविधान को सर्वोपरि मानते हैं, इसलिए हम 25 जून को भी कभी भुला नहीं सकते। यह वही दिन है, जब हमारे देश पर इमरजेंसी थोपी गई थी। यह भारत के इतिहास का काला दौर था। लाखों लोगों ने इमरजेंसी का पूरी

ताकत से विरोध किया था। लोकतंत्र के समर्थकों पर उस दौरान इतना अत्याचार किया गया, इतनी यातनाएँ दी गईं कि आज भी मन सिहर उठता है। इन अत्याचारों पर पुलिस और प्रशासन द्वारा दी गई सजाओं पर बहुत सी पुस्तकें लिखी गई हैं। मुझे भी 'संघर्ष में गुजरात' नाम से एक किताब लिखने का उस समय मौका मिला था। कुछ दिनों पहले ही इमरजेंसी पर लिखी एक और किताब मेरे सामने आई, जिसका शीर्षक है – *Torture of Political Prisoners in India*. इमरजेंसी के दौरान छपी इस पुस्तक में वर्णन किया गया है कि कैसे उस समय की सरकार, लोकतंत्र के रखवालों से क्रूरतम व्यवहार कर रही थी। इस किताब में ढेर सारी केस स्टडीज़ हैं, बहुत सारे चित्र हैं। मैं चाहूँगा कि आज, जब हम आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, तो देश की आज़ादी को खतरे में डालने वाले ऐसे अपराधों का भी ज़रूर अवलोकन करें। इससे आज की युवा पीढ़ी को लोकतंत्र के मायने और उसकी अहमियत समझने में और ज़्यादा आसानी होगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' रंग-बिरंगे मोतियों से सजी एक सुंदर माला है, जिसका हर मोती अपने आपमें अनूठा और अनमोल है। इस कार्यक्रम का हर एपिसोड बहुत ही जीवन्त होता है। हमें सामूहिकता की भावना के साथ-साथ समाज के प्रति कर्त्तव्य-भाव और सेवा-भाव से भरता है। यहाँ उन विषयों पर खुलकर चर्चा होती है, जिनके बारे में हमें आमतौर पर कम ही पढ़ने–सुनने को मिलता है। हम अक्सर देखते हैं कि 'मन की बात' में किसी विषय का ज़िक्र होने के बाद कैसे अनेकों देशवासियों को नई प्रेरणा मिली। हाल ही में मुझे देश की प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय नृत्यांगना आनंदा शंकर जयंत का एक पत्र मिला। अपने पत्र में उन्होंने 'मन की बात' के उस एपिसोड के बारे में लिखा है, जिसमें हमने स्टोरी टेलिंग

के बारे में चर्चा की थी। उस कार्यक्रम में हमने इस फील्ड से जुड़े लोगों की प्रतिभा को एकनॉलेज किया था। 'मन की बात' के उस कार्यक्रम से प्रेरित होकर आनंदा शंकर जयंत ने 'कुट्टी कहानी' तैयार की है। यह बच्चों के लिए अलग-अलग भाषाओं की कहानियों का एक बेहतरीन संग्रह है। यह प्रयास इसलिए भी बहुत अच्छा है, क्योंकि इससे हमारे बच्चों का अपनी संस्कृति से लगाव और गहरा होता है। उन्होंने इन कहानियों के कुछ इंटेरेस्टिंग वीडियोज़ अपने YouTube चैनल पर भी अपलोड किए हैं। **मैंने आनंदा शंकर जयंत के इस प्रयास की विशेष तौर पर इसलिए चर्चा की, क्योंकि ये देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा कि कैसे देशवासियों के अच्छे काम दूसरों को भी प्रेरित कर रहे हैं। इससे सीखकर वे भी अपने हुनर से देश और समाज के लिए कुछ बेहतर करने की कोशिश करते हैं। यही तो हम भारतवासियों का वो कलेक्टिव पॉवर है, जो देश की प्रगति में नई शक्ति भर रही है।**

मेरे प्यारे देशवासियो, इस बार 'मन की बात' में मेरे साथ इतना ही। अगली बार नए विषयों के साथ आपसे फिर मुलाक़ात होगी। बारिश का समय है, इसलिए अपने स्वास्थ्य का खूब ध्यान रखिए। संतुलित खाइए और स्वस्थ रहिए। हाँ! योगा ज़रूर कीजिए। अब कई स्कूलों में गर्मी की छुट्टियाँ भी खत्म होने को हैं। मैं बच्चों से भी कहूँगा कि होमवर्क लास्ट दिन के लिए पेंडिंग ना रखें। काम खत्म करिए और निश्चिंत रहिए। बहुत- बहुत धन्यवाद।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

चक्रवात बिपरजॉय

भारत का उल्लेखनीय आपदा प्रबन्धन

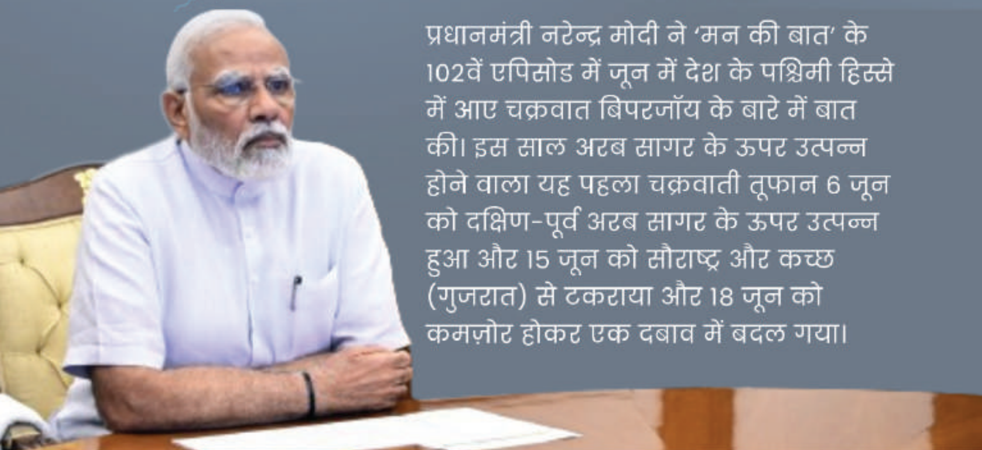

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के 102वें एपिसोड में जून में देश के पश्चिमी हिस्से में आए चक्रवात बिपरजॉय के बारे में बात की। इस साल अरब सागर के ऊपर उत्पन्न होने वाला यह पहला चक्रवाती तूफान 6 जून को दक्षिण-पूर्व अरब सागर के ऊपर उत्पन्न हुआ और 15 जून को सौराष्ट्र और कच्छ (गुजरात) से टकराया और 18 जून को कमज़ोर होकर एक दबाव में बदल गया।

क्या था चक्रवात 'बिपरजॉय'?

- **'अत्यंत भीषण चक्रवाती तूफान'** के रूप में वर्गीकृत
- 15 जून को **कच्छ में जखाऊ** बंदरगाह के पास **लैंडफॉल** हुआ
- लैंडफॉल के समय हवा की गति अधिकतम **115-125** किमी. प्रति घंटा
- 1977 के बाद से उत्तरी हिन्द महासागर में **सबसे लम्बी अवधि का चक्रवाती तूफान**
- कुल **13 दिन और 3 घंटे** तक प्रभावी रहा (भीषण चक्रवाती तूफानों की अवधि से दोगुने से भी अधिक)
- **बाँग्लादेश** द्वारा नामित **'बिपरजॉय'** का बंगाली में अर्थ **'आपदा'** है

जैसा कि प्रधानमंत्री ने कहा, भारत का मज़बूत आपदा प्रबन्धन ऐसी प्राकृतिक आपदाओं के सामने एक अनुकरणीय मॉडल के रूप में कार्य करता है। चक्रवात बिपरजॉय कोई अपवाद नहीं था।

तैयारी

- किसी आपदा के तुरंत बाद बेहतर प्रतिक्रिया देने और उससे निपटने के लिए भारत में केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा पहले से ही कई उपाय किए जाते हैं।
- इनमें खोज और बचाव के लिए प्रशिक्षण, प्रारम्भिक चेतावनी प्रणाली स्थापित करना, आकस्मिक योजनाएँ विकसित करना और उपकरण और आपूर्ति का भंडारण शामिल हैं।
- भारत ने पिछले कुछ वर्षों में जोखिमों को समझने, उनके पूर्व-निवारण और शीघ्र कार्रवाई के लिए तैयारी की क्षमताओं के निर्माण में निवेश किया है।
- चक्रवात बिपरजॉय के मामले में पहले पाकिस्तान में कराची की ओर बढ़ने की भविष्यवाणी की गई थी। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) दुनिया की उन पहली कुछ एजेंसियों में से एक था, जिन्होंने घोषणा की थी कि चक्रवात उत्तर-पश्चिमी गुजरात तट की ओर बढ़ रहा है।
- लगातार बेहतर हो रही चक्रवात पूर्वानुमान प्रणाली और प्रभावित क्षेत्र में मज़बूत अवलोकन नेटवर्क के साथ IMD प्रशासन और आपदा प्रबन्धन एजेंसियों को सम्भावित प्रभाव के लिए बेहतर तैयारी करने की मदद करने में सक्षम रहा।

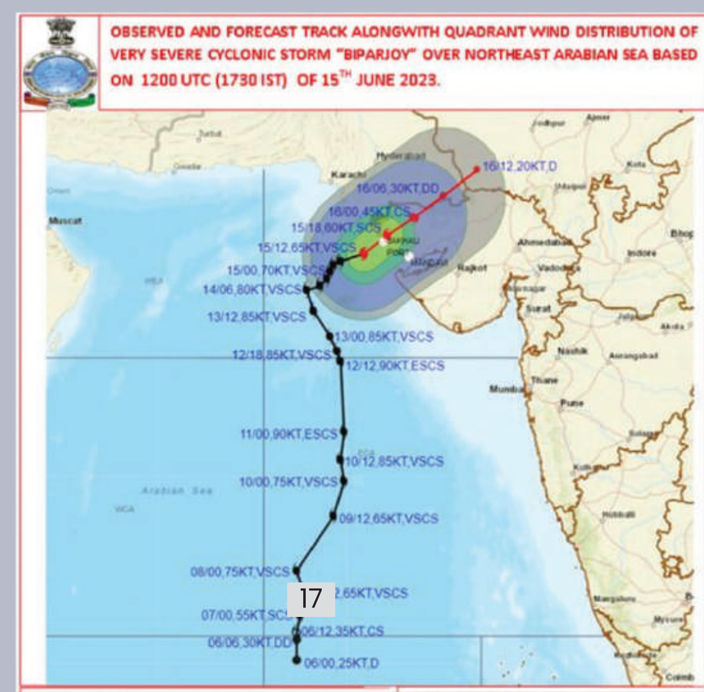

प्री-लैंडफॉल प्रतिक्रिया

प्रधानमंत्री ने स्वयं सभी हितधारकों के साथ उच्च-स्तरीय बैठकों की अध्यक्षता करते हुए त्वरित कार्रवाई का नेतृत्व किया। 'ज़ीरो कैज़ुअल्टी' सुनिश्चित करने और चक्रवात से होने वाली सम्भावित क्षति को कम करने के उद्देश्य से कई उपाय किए गए।

- गुजरात के तटीय ज़िलों के साथ-साथ दीव में NDRF और SDRF टीमों की तैनाती
- भारतीय सेना, नौसेना, वायु सेना, कोस्ट गार्ड और BSF की टीमें स्टैंडबॉय पर रहीं
- संवेदनशील गाँवों को खाली कराने के लिए उनकी सूची तैयार की गई
- चक्रवात की 'व्यापक क्षति क्षमता' के बारे में IMD की चेतावनी के बाद लगभग एक लाख लोगों को निकाला गया
- स्थायी आश्रयों के अतिरिक्त 1,521 आश्रय गृहों का निर्माण
- तूफ़ान से प्रभावित होने की आशंका वाले क्षेत्रों में लगभग 450 अस्पतालों में तैयारी
- 597 विद्युत आपूर्ति टीमों की तैनाती एवं सभी अस्पतालों में विद्युत की वैकल्पिक व्यवस्था
- भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (INCOIS) के माध्यम से मछुआरों को कई सलाह दी गईं
- लैंडफॉल के बाद मूसलाधार बारिश से उत्पन्न बाढ़ से निपटने के लिए आवश्यक तैयारी
- पशुधन और वन्यजीव सुरक्षा, विशेषकर एशियाई शेरों की सुरक्षा पर बल
- राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण (NDMA) के SACHET का उपयोग करके आम जनता को एसएमएस भेजे गए
- तैयारियों का आकलन करने और सम्भावित नुकसान को कम करने के लिए केंद्रीय गृह मंत्री द्वारा कई वर्चुअल बैठकें की गईं

पोस्ट-लैंडफॉल प्रतिक्रिया

- प्रभावित क्षेत्रों में बिजली, दूरसंचार, स्वास्थ्य देखभाल (आवश्यक दवाओं की आपूर्ति सहित) और पीने के पानी जैसी महत्त्वपूर्ण सेवाओं की शीघ्र बहाली और रखरखाव
- बाढ़-प्रभावित क्षेत्रों से लोगों को निकालना
- 200 से अधिक क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत एवं पुनरुद्धार
- उखड़े हुए पेड़ों को हटाना और सड़कों को खोलना
- गृह मंत्रालय और राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्रों द्वारा स्थिति की 24x7 निगरानी
- CM डैशबोर्ड ने बचाव और राहत कार्यों पर राज्य सरकार के सभी विभागों से रियल टाइम विज़ुअल जानकारी व अपडेट प्रदान किया
- केंद्रीय गृह मंत्री ने बचाव और बहाली की निगरानी के लिए प्रभावित क्षेत्रों के ज़िला कलेक्टरों के साथ वर्चुअल बैठकें कीं
- उन्होंने चक्रवात प्रभावित कच्छ ज़िले का हवाई सर्वेक्षण भी किया और घायल लोगों से मिलने के लिए कच्छ के मांडवी सिविल अस्पताल का दौरा किया
- बाढ़ की स्थिति में सुरक्षा के लिए एशियाई शेरों का कुशलतापूर्वक ऊँचे स्थानों पर स्थानांतरण किया गया

अनुक्रिया से तैयारी तक : आपदा प्रबन्धन के प्रति भारत का परिवर्तनकारी दृष्टिकोण

लेफ्टिनेंट जनरल सैयद अता हसनैन (सेवानिवृत्त)
सदस्य, राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण

भारत में आपदा प्रबन्धन के क्षेत्र को 2005 का आपदा प्रबन्धन अधिनियम बनने के साथ बढ़ावा मिला। हालाँकि भारत के आपदा प्रबन्धन प्रयासों में पारम्परिक प्रतिक्रिया-आधारित प्रणालियों से अधिक आधुनिक तैयारी-आधारित प्रणालियों में परिवर्तन श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा देश के प्रधानमंत्री के रूप में कार्यभार सम्भालने के बाद आया। विभिन्न प्रकार की आपदाओं से निपटने के अपने व्यावहारिक अनुभव के साथ, जिसकी परिणति मुख्यमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान 2001 के गुजरात भूकम्प में हुई, उन्होंने आपदा प्रबन्धन की पूर्ण और व्यापक समझ के साथ अद्वितीय अंतर्दृष्टि प्राप्त की। हाल में गुजरात के तट को तबाह कर राजस्थान में पहुँचने वाले चक्रवात बिपरजॉय से प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सरकार ने बहुत संवेदनशीलता और संकल्पना की भावना से निपटा था।

आपदा प्रबन्धन की दिशा में प्रधानमंत्री का ऐतिहासिक योगदान उनके पहले कार्यकाल के सिर्फ दो साल बाद 2016 की शुरुआत में आया। एशियाई मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में उन्होंने दुनिया को 'आपदा जोखिम न्यूनीकरण' (DRR) के लिए 'दस सूत्री एजेंडा' दिया। जहाँ भारत इसे एक मंत्र के रूप में मानता है, वहीं दुनिया भी इसे DRR के लिए सबसे प्रभावी फार्मूला मानती है। चक्रवात बिपरजॉय की चपेट में आने से उत्पन्न संकट की स्थितियों से निपटने में एजेंडा के कई सूत्र काम आए।

6 जून से 19 जून तक चक्रवात के बारे में भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने सभी हितधारकों के लिए 16 बुलेटिन एक-एक घंटे पर और 98 बुलेटिन हर तीन घंटे पर जारी किए। राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण (NDMA) ने गुजरात के मुख्य सचिव और राजस्व आयुक्त सहित सभी हितधारकों को सूचित किया। अद्यतन जानकारी एक व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से अनुक्रिया में शामिल सभी लोगों के साथ साझा की गई थी।

6 जून को NDMA ने पश्चिमी तट पर सभी प्रभावित राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के मुख्य सचिव और राहत आयुक्तों को चक्रवाती तूफ़ान के मद्देनज़र किए जाने वाले 'तैयारी उपायों' को प्रसारित किया। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय को 12 जून को 'अत्यंत गम्भीर चक्रवात' के मद्देनज़र सभी एहतियाती कदम उठाने के लिए कहा गया था, क्योंकि इसकी कई सुविधाएँ लैंडफॉल क्षेत्र के करीब थीं।

6 से 19 जून तक गृह मंत्रालय के आपदा प्रबन्धन प्रभाग के राष्ट्रीय आपात कार्रवाई केंद्र ने सभी प्रभावित राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (NDRF), भारतीय तट रक्षक बल, चीफ़ ऑफ़ स्टाफ़ कमेटी मुख्यालय (एकीकृत रक्षा स्टाफ़) के चेयरमैन चीफ़, कैबिनेट सचिव और सभी सम्बन्धित केंद्रीय मंत्रालयों और विभागों को 99 परामर्श भी जारी किए।

केंद्रीय गृह सचिव की अध्यक्षता में राष्ट्रीय कार्यकारी समिति (NIC) ने चक्रवात के खतरे से निपटने के लिए केंद्रीय मंत्रालयों तथा एजेंसियों और गुजरात सरकार की तैयारियों की समीक्षा की। प्रधानमंत्री ने 12 जून को तैयारियों का व्यक्तिगत रूप से जायज़ा लेने के लिए एक उच्च स्तरीय बैठक की। इसके बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने समीक्षा बैठक की। स्थिति की समीक्षा और परामर्श के लिए कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता में राष्ट्रीय संकट प्रबन्धन समिति की भी बैठक हुई। केंद्रीय मंत्रियों ने व्यवस्थाओं की बहु-स्तरीय समीक्षा के लिए प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया और किसी भी तरह की ढिलाई की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी।

जहाज़ों, विमानों और चिकित्सा संसाधनों, NDRF टीमों, भारतीय तटरक्षक बल और सामुदायिक स्वयंसेवकों सहित बड़ी संख्या में राज्य संसाधनों सहित सशस्त्र बलों के रूप में राष्ट्रीय संसाधनों को सक्रिय रूप से लगाया गया था। NDMA द्वारा स्थापित कॉमन अलर्टिंग प्रोटोकॉल (CAP) आधारित एकीकृत चेतावनी प्रणाली, जो वर्तमान में कार्यान्वित की जा रही है और SMS, मोबाइल ऐप, ब्राउज़र नोटिफ़िकेशन्स, RSS फीड तथा NavIC/ गगन उपग्रह टर्मिनलों द्वारा अलर्ट के प्रसार के लिए पूरी तरह कार्यात्मक है, जिसका उपयोग चक्रवात बिपरजॉय के दौरान बड़े पैमाने पर किया गया था। ऊपर सूचीबद्ध प्रसार मीडिया के अलावा DTH पर सीधे टीवी सेट पर भी अलर्ट प्रसारित किए गए थे। चक्रवात अवधि के दौरान कुल 32.67 करोड़ SMS भेजे गए। चेतावनियों में ऊँची लहरों, तेज़ हवाओं, तूफ़ान और अत्यधिक भारी वर्षा के बारे में अलर्ट शामिल थे।

यह देखा जा सकता है कि विभिन्न स्तरों पर उच्च स्तर के नेतृत्व के साथ-साथ विकासशील प्रौद्योगिकियों की तैयारियों और नियोजन में सक्रिय दृष्टिकोण ने चक्रवात बिपरजॉय से खतरे को सफलतापूर्वक बेअसर कर दिया। भारत का आपदा प्रबन्धन समुदाय प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन, निर्णयों और निर्देशों के लिए उनका आभारी है, जिससे यह सफलता सुनिश्चित हुई है।

राज कुमार
मुख्य सचिव, गुजरात सरकार

आंतरिक क्षमता और शक्ति का निर्माण

चक्रवात बिपरजॉय की सूचना मिलते ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्रीय सरकार और राज्य सरकार तुरंत इसका सामना करने की तैयारियों में जुट गईं। स्वयं प्रधानमंत्री ने गृह मंत्रालय, गुजरात सरकार और सभी सम्बन्धित एजेंसियों का लगातार मार्गदर्शन किया और तैयारियों की ख़बर ली। जब आपदा गुजरात में चरम पर थी, उस वक्त सभी तंत्र, हमारी जनता और मीडिया ने मिलकर काम किया। इस आपदा से न्यूनतम क्षति के साथ बाहर निकलना टीम वर्क और पब्लिक पार्टिसिपेशन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। पूरे तंत्र, हमारे मुख्यमंत्री, समस्त मंत्री-गण और ज़िला परिषद के सहयोग से हमने मिलकर बिपरजॉय का सामना किया और सबकी सुरक्षा सुनिश्चित कर पाए।

प्राकृतिक आपदा की समय पर जानकारी मिलना और उस जानकारी को समग्र तंत्र के माध्यम से लोगों तक पहुँचाना आवश्यक है। हमारे मौसम विभाग के अधिकारियों ने बहुत अच्छी तरह से हमें लगातार सूचनाएँ दीं कि इस चक्रवात का मार्ग क्या है, हर घंटे यह कहाँ, किस स्थान पर है और किस दिशा में किस गति से आगे बढ़ने वाला है। यह सारी इनफार्मेशन हमें समय-समय पर लगातार मिलती रही, जिसके आधार पर हमने हमारे कोस्टल एरिया के डिस्ट्रिक्ट, ब्लॉक और गाँवों में मैपिंग कर लोगों को सुरक्षित स्थल पर स्थानांतरित कर दिया। गुजरात के इतिहास में पहली बार डेढ़ लाख से अधिक लोगों को आश्रय स्थल में रखा गया।

मैं यह मानता हूँ कि तैयारी परीक्षा से पहले की होती है, तो पहले की गई तैयारियाँ ही हमारे काम आती हैं। जब लैंडफॉल हुआ, उस समय भी हमारा लोगों से संवाद जारी था और इसलिए हमारा कॉन्फिडेंस बना रहा। मेरे विचार में ऐसी बड़ी विपत्ति का सामना करने के लिए एकजुट होकर वैज्ञानिक तरीके से हमने जो तैयारियाँ की थीं, उससे हम परिस्थिति का सामना अच्छे से कर सके।

भारत सरकार के निर्देशानुसार मुख्यमंत्री खुद प्रभावित क्षेत्रों के डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर्स के साथ बैठक करते थे। मैं खुद सवेरे और शाम वहाँ हो रही तैयारियों का आकलन करता था। हमने सुनिश्चित किया कि जहाँ बिजली के ट्रांसफार्मर ध्वस्त होने की सम्भावना है, वहाँ ज़रूरी प्रबन्ध हो। हेल्थ डिपार्टमेंट ने भी आवश्यक दवाओं का अस्पतालों में इंतज़ाम किया। जहाँ पर भी फ्लैश फ्लड आने की उम्मीद थी, उन सब गाँवों में कम ऊँचाई में रहने वाले लोगों को हमने शिफ्ट किया और NDRF तथा SDRF की टीम को पहले भेज दिया था। और तो और हमने पहले से वॉटर सप्लाई के लिए वाटर वर्क्स की व्यवस्थाएँ कीं ताकि अगर बिजली न भी हो तो पानी की सप्लाई होती रहे। सड़क एवं भवन विभाग ने वृक्षों की ट्रिमिंग का काम किया ताकि सड़कें बंद न हों। फिशरीज़ डिपार्टमेंट ने एक-एक फिशरमैन और उनके बोट को समुद्र से वापस लाने का प्रबंध किया, यहाँ तक कि साइंस एंड टेक्नोलॉजी डिपार्टमेंट ने सभी मोबाइल ऑपरेटर्स के साथ मिलकर यह तय किया कि यदि कोई मोबाइल टॉवर गिर जाए तो रोमिंग फैसिलिटी देकर वह दूसरे ऑपरेटर के टॉवर का इस्तेमाल करेंगे। सभी विभागों से सम्पर्क बनाए रखने के लिए सेटेलाइट फ़ोन की व्यवस्थाएँ भी की गईं।

सभी चीज़ों का ध्यान रखते हुए हमने 1,100 से अधिक गर्भवती महिलाओं को चिह्नित किया, जिनकी डिलीवरी साइक्लोन के दौरान होने की सम्भावना थी, उनको एडवांस में हमने सरकारी हॉस्पिटल में शिफ्ट कर दिया। इस दौरान 700 से अधिक महिलाओं ने बच्चों को जन्म दिया। जब केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह जी मांडवी के सरकारी हॉस्पिटल में महिलाओं से मुलाकात करने गए तो एक महिला ने बताया कि वह अपनी बच्ची का नाम ख़ुशी रख रही है। हमारी इस एडवांस योजना की वजह से काफ़ी माताओं ने स्वस्थ बच्चों को सुरक्षित वातावरण में जन्म दिया। हमने प्रभावित क्षेत्रों के पालतू पशुधन को भी सुरक्षित स्थलों तक ले जाने की व्यवस्था की थी। लगभग 70,000 पशुओं को हम पहले ही सुरक्षित स्थलों तक ले गए।

आपदा हमारे लिए अपॉर्चुनिटी बनकर आती है। 2001 में कच्छ के भूकम्प से हुए नुकसान और उस आपदा से बाहर आने के बाद हमारी आंतरिक क्षमता और शक्ति का निर्माण हुआ। हमने गुजरात से आपदा प्रबन्धन अधिनियम का विधानसभा में कानून बनाया और साथ ही प्रशासनिक व्यवस्थाएँ खड़ी कीं जैसे गुजरात स्टेट डिज़ास्टर मैनेजमेंट एजेंसी, गुजरात इंस्टिट्यूट ऑफ़ डिज़ास्टर मैनेजमेंट, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ सीस्मोलॉजिकल रिसर्च। इतना ही नहीं, हमने कोस्टल एरिया में 70 से ज़्यादा आश्रय स्थल बनाए। हर ज़िले में आपदा से लड़ने के लिए अलग से सेंटर खड़े किए, जिससे समग्र स्थानिक तंत्र एक साथ आकर आपस में आयोजन कर सकें और जो सूचना मिले, उसको तुरंत तालुका और गाँवों तक पहुँचा सकें। चक्रवात बिपरजॉय की खबर मिलते ही सारे डिस्ट्रिक्ट के ब्लॉक्स् के कंट्रोल रूम्स् एक-दूसरे के साथ जुड़ गए।

प्रधानमंत्री जी जब राज्य के मुख्यमंत्री थे, तब कच्छ के भूकम्प और उसके बाद होने वाली परिस्थिति में से निकालने के लिए उन्होंने जो गुजरात के लिए किया, वह अविस्मरणीय है। आज जो व्यवस्था है, वह उन्होंने ही खड़ी की थी। चक्रवात के समय भी वे हमें मार्गदर्शन देते रहे, यहाँ तक कि गिर के जंगल में वाइल्डलाइफ की परिस्थिति कैसी है, इससे जुड़े सवाल–जवाब भी उन्होंने हमसे किए। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति और हर व्यवस्था के प्रति हमें मार्गदर्शन दिया। हमारे समुद्र दल ने एकजुट होकर प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में काम किया।

मुख्य सचिव का साक्षात्कार सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें

हमारी नीली जीवन रेखा का संरक्षण

जल संरक्षण का मार्ग

"प्राकृतिक आपदाओं से मुकाबला करने का एक बड़ा तरीका है– प्रकृति का संरक्षण। ये नदी, नहर, सरोवर, केवल जल-स्रोत ही नहीं होते हैं, बल्कि इनसे जीवन के रंग और भावनाएँ भी जुड़ी होती हैं।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(102वें 'मन की बात' सम्बोधन में)

पानी की कमी और बढ़ती पर्यावरणीय चिन्ताओं से जूझ रहे भारत में जल संरक्षण सतत विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्राथमिकता के रूप में उभरा है। प्रधानमंत्री ने बार-बार राष्ट्र से इस महत्त्वपूर्ण संसाधन के संरक्षण में सक्रिय रूप से भाग लेने का आग्रह किया है। उन्होंने व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी से लेकर सामुदायिक प्रयासों तक जल संरक्षण के विभिन्न तरीकों पर प्रकाश डाला है। उन्होंने पारम्परिक जल प्रबन्धन प्रणालियों, बावड़ियों और जल निकायों जैसे प्राकृतिक संसाधनों के पुनरुद्धार की वकालत की है। अमृत सरोवर से लेकर भारत की वेटलैंड्स तक, नमामि गंगे से लेकर जल शक्ति अभियान तक, सिक्किम की त्सोमगो पोखरी संरक्षण समिति से लेकर जल संरक्षण में क्रान्ति लाने वाले भारतीय स्टार्टअप्स तक, प्रत्येक ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'मन की बात' सम्बोधनों में अपना उल्लेख पाया है। उनके प्रयासों ने जल संरक्षण के महत्त्व के बारे में सामूहिक चेतना पैदा करने और भारत के लिए अधिक सस्टेनेबल भविष्य की नींव रखने में मदद की है।

उत्तर प्रदेश के बांदा में तालाबों का पुनर्जीवन

"मैं बहुत आभारी हूँ कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' में मेरा और गाँव का ज़िक्र किया और हमारे प्रयासों की सराहना की। मेरा मानना है कि गाँव में पानी की एक बूँद भी बर्बाद नहीं होनी चाहिए। हम भविष्य में गाँव में और भी तालाब बनाएँगे और हमारा लक्ष्य प्रत्येक तालाब में जल संरक्षण करना है। जल संरक्षण के लिए सभी को काम करना चाहिए और सरकार भी इस पहल में शामिल लोगों की मदद करती है।"

-तुलसीराम यादव, प्रधान, लुकतरा ग्राम पंचायत

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अपने 'मन की बात' सम्बोधन में उल्लिखित 'कैच द रेन' पहल भारत में जल संरक्षण को बढ़ावा देने वाला एक महत्त्वपूर्ण अभियान है। व्यक्तियों और समुदायों को वर्षा जल संचयन के लिए प्रोत्साहित करते हुए इसका उद्देश्य भूजल को फिर से भरना और पानी की कमी से निपटना है। नवीन तकनीकों और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से यह पहल सभी के लिए एक सस्टेनेबल और जल-सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित करने का प्रयास करती है।

कभी पानी की गम्भीर समस्या से जूझने वाले बांदा ज़िले का लुकतरा गाँव अब ग्राम प्रधान तुलसीराम यादव और अन्य निवासियों के प्रयासों से बनाए गए 40 तालाबों से बदल गया है। दूरदर्शन की टीम ने इस पहल के बारे में जानने के लिए लुकतरा गाँव के निवासियों से बातचीत की।

"मैं लुकतरा गाँव का पंचायत मित्र हूँ। 'खेत का पानी खेत में और गाँव का पानी गाँव में' पहल के तहत 45 तालाब खोदे गए और MGNREGA के माध्यम से तालाबों की सफ़ाई की गई और उससे गाँवों में बहुत विकास हो रहा है। तालाब के पानी से खेतों की सिंचाई में काफी मदद मिलती हैं और जलस्तर भी बढ़ता है। तालाब से हमारे गाँवों को सारी सुविधाएँ मिल रही हैं।"

-सुनील कुमार, पंचायत मित्र, लुकतरा गाँव

"हमारे प्रधान तुलसी राम यादव जी द्वारा हमारे गाँवों में 40 से अधिक तालाब बनवाए गए। पानी का उपयोग खेती में हो रहा है और खेतों की उपज बढ़ रही है। इन जल निकायों के पुनरुद्धार से गाँव में जल स्तर स्थिर हो गया है। प्रधान जी ने सभी को जल संरक्षण के लिए प्रेरित किया और इन तालाबों के निर्माण की दिशा में सख्ती से काम किया।"

- राम किशोर अवस्थी, निवासी, लुकतरा गाँव

राजसी प्रवाह

नीम नदी की सुंदरता की पुनः खोज

अपने हालिया 'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विलुप्त हो चुकी नीम नदी को पुनर्जीवित करने के लिए उत्तर प्रदेश के हापुड़ ज़िले के निवासियों के सामूहिक प्रयासों का उल्लेख किया। दूरदर्शन की टीम ने इस पहल के पीछे की प्रेरणा के बारे में अधिक जानने के लिए 'नदी पुत्र' के नाम से मशहूर रमाकांत त्यागी से बात की।

"प्रधानमंत्री का प्रोत्साहन, जो स्वयं नदियों के प्रति जागरूक हैं, हमारे लिए एक बड़ी बात थी और इससे हमें इतना प्रोत्साहन और उत्साह मिला कि हमारा जोश और बढ़ गया। समाज और सरकार के सामूहिक प्रयासों से यह परियोजना तीन वर्ष की अवधि में पूरी हुई। इस पहल में लोगों और प्रशासन ने बहुत योगदान दिया है, जिसके बिना यह सपना कभी पूरा नहीं होता। प्रधानमंत्री द्वारा प्राप्त सराहना से हमारे हापुड़ के समुदाय को खुशी और पुष्टि मिली है कि हमारे प्रयास सफल रहे।

मैं पिछले 2.5 दशकों से अधिक समय से नदियों के संरक्षण की दिशा में काम कर रहा हूँ। हम नदी के किनारे रहकर बड़े हुए हैं और उनके संरक्षण के लिए काम करना हमारा कर्त्तव्य है। हमें इस सोच के साथ आगे बढ़ना है कि हमारी नदियों को सुधारने की ज़रूरत है। वह भूमि, जहाँ से शुरू में नीम नदी का उद्गम हुआ था, खेती के लिए उपयोग की जाती थी। हालाँकि उस ज़मीन को अचानक छोड़ना मुश्किल था, लेकिन नदी को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता को प्राथमिकता दी गई। इसलिए एक बार जब निवासियों को प्रक्रिया समझाई गई, तो वे धीरे-धीरे समझ गए और इस पहल में शामिल हो गए।

दो साल पहले प्रधानमंत्री ने ग्राम प्रधानों को अपने-अपने गाँव में एक तालाब बनाने के लिए पत्र लिखा था। अपने 'मन की बात' में उन्होंने मिशन अमृत सरोवर के बारे में बात की, जिसका उद्देश्य देश भर के प्रत्येक ज़िले में 75 जल निकायों का विकास और कायाकल्प करना था। हमने उत्तर प्रदेश में कुछ अविश्वसनीय काम होते देखा है और प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में मिशन और जल संरक्षण के बारे में उल्लेख किया है। उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री, स्वतंत्रदेव सिंह ने भी इस मिशन को प्रोत्साहित किया था, जिसने हमें अमृत सरोवर और नीम नदी के लिए प्रेरित किया।"

पुनर्जीवित नीम नदी के बारे में अधिक जानने के लिए QR कोड स्कैन करें

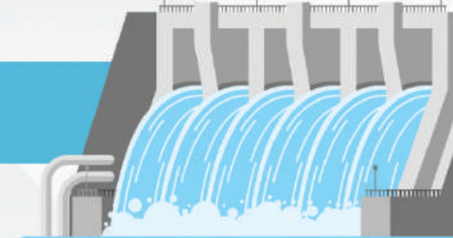

निलवंडे बाँध

समृद्धि के लिए प्रकृति की शक्ति का उपयोग

हाल ही में 'मन की बात' एपिसोड में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने महाराष्ट्र के अहमदनगर ज़िले में जल संरक्षण के एक और प्रयास की सराहना की। निलवंडे बाँध परियोजना जल चुनौतियों से निपटने और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। दूरदर्शन की टीम ने इस परियोजना के बारे में अधिक जानने के लिए अहमदनगर के निवासियों से बातचीत की।

"यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है कि प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' में निलवंडे बाँध का उल्लेख किया। पहले सूखा पड़ता था, पीने के लिए पानी नहीं था, गायों के लिए चारा नहीं था और हम सिर्फ बारिश पर निर्भर रहते थे। आशा है कि निलवंडे बाँध के निर्माण से हमारी समस्याएँ समाप्त हो जाएँगी। इससे हमारे यहाँ के लोग बहुत खुश हैं।"

-सुमित संजय शेलके, निवासी, अहमदनगर

"मैं भारत के प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी का आभारी हूँ कि उन्होंने अपने 'मन की बात' में निलवंडे बाँध का उल्लेख किया। बाँध के निर्माण से पहले हमारे क्षेत्र को गम्भीर सूखे का सामना करना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप महत्त्वपूर्ण कृषि चुनौतियाँ पैदा हुईं। बाँध के निर्माण से हमें अत्यधिक लाभ होगा, कृषि प्रयासों और दुग्ध उद्योग दोनों को सहायता मिलेगी।"

-निर्मल शिवाजी भागवत, निवासी, अहमदनगर

"मैं 'मन की बात' सम्बोधन में निलवंडे बाँध के महत्त्व को स्वीकार करने के लिए प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त करती हूँ। निलवंडे बाँध से जो पानी आएगा, वह हमारे सूखे खेतों में हरियाली लाने वाला है और इससे हमें बहुत फायदा होने वाला है, इसलिए मैं केंद्र सरकार और राज्य सरकार, दोनों को धन्यवाद देना चाहती हूँ।"

- जयश्री सचिन निर्मल, निवासी, अहमदनगर

टीबी के ख़िलाफ़ भारत की लड़ाई में अग्रणी

नि-क्षय मित्र

“भारत ने संकल्प किया है 2025 तक टीबी मुक्त भारत बनाने का। इस क्षय रोग को जड़ से समाप्त करने के लिए नि-क्षय मित्रों ने मोर्चा सम्भाल लिया है। हज़ारों लोगों ने खुद आगे आकर टीबी मरीज़ों को गोद लिया है। ये जन-भागीदारी ही इस अभियान की सबसे बड़ी ताकत है। इसी भागीदारी की वजह से आज देश में 10 लाख से ज़्यादा टीबी मरीज़ों को गोद लिया जा चुका है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“मैं हमारे प्रधानमंत्री जी और सरकार की सराहना करती हूँ कि उन्होंने नि-क्षय मित्र योजना का प्रारम्भ किया। मेरा लोगों से निवेदन है कि प्रधानमंत्री जी का आह्वान सुनें और जनभागीदारी में जुड़ें। एक इंसान जब दूसरे इंसान की मदद के लिए उतरता है, तो इससे बेहतर कार्य क्या हो सकता है।”

-दीपा मलिक
पैरालिम्पियन, टीबी मुक्त भारत अभियान की राष्ट्रीय राजदूत और नि-क्षय मित्र

तपेदिक (टीबी) लम्बे समय से विश्व के लिए एक स्वास्थ्य संकट रहा है, जिससे लाखों लोग पीड़ित हैं और यह बीमारी उनकी अथाह पीड़ा का कारण बन रही है। भारत में इसका प्रकोप गम्भीर रहा है। उच्च जनसंख्या घनत्व और विभिन्न सामाजिक चुनौतियों के साथ देश को टीबी बढ़ने से रोकने में कठिन लड़ाई का सामना करना पड़ा है। इस बीमारी ने न केवल प्रभावित लोगों के शारीरिक स्वास्थ्य पर असर डाला है, बल्कि उनकी भावनात्मक आरोग्यता और वित्तीय स्थिरता को भी खत्म कर दिया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में, सरकार अपनी विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल योजनाओं और पहलों के माध्यम से, ‘वन वर्ल्ड वन हेल्थ’ के वैश्विक कल्याण को रेखांकित कर रही है। टीबी की चुनौती से निपटने के लिए भारत सरकार ने जिस प्रकार खुद को प्रतिबद्ध किया है, उससे भारत 2025 तक टीबी को समाप्त करने की राह पर अग्रसर है। पिछले 9 वर्षों में भारत से टीबी को खत्म करने के लिए बहु-आयामी दृष्टिकोण अपनाए गए हैं। टीबी रोगियों की सटीक पहचान सुनिश्चित करना, समय पर मामलों की रिपोर्टिंग, प्रभावी दवा और दवा प्रतिरोधी विकृतियों पर नज़र रखना सरकार की महत्त्वपूर्ण प्राथमिकताएँ रही हैं। प्रौद्योगिकी और नवाचार की शक्ति का उपयोग करते हुए बेहतर कार्यक्रम प्रबन्धन, उपचार निगरानी, रोग निगरानी के लिए अत्याधुनिक सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी प्रणाली और इंटरनेट-ऑफ़-थिंग्स प्लेटफॉर्म विकसित किए जा रहे हैं।

‘सबका साथ, सबका विकास’ के अपने आदर्श वाक्य के लिए प्रतिबद्ध, सरकार ने ‘प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान’ के माध्यम से लोगों की भागीदारी भी शामिल की है, जिसमें नि-क्षय मित्र के रूप में समुदाय को टीबी रोगियों को गोद लेने और उन्हें पोषण सम्बन्धी सहायता, पोषक तत्वों की खुराक, अतिरिक्त जाँच और व्यावसायिक सहयोग के साथ सहायता करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

आज नि-क्षय मित्र टीबी के खिलाफ़ सामूहिक लड़ाई छेड़कर इस बीमारी को फिर से परिभाषित और कलंकमुक्त कर रहे हैं। यह सुनिश्चित करते हुए कि सम्पूर्ण-समाज का दृष्टिकोण सम्पूर्ण-सरकारी प्रयासों का पूरक है, नि-क्षय मित्र कार्यक्रम भारतीय लोगों की ताकत और संवेदना के लिए एक शक्तिशाली प्रमाण के रूप में कार्य करता है। यह टीबी के खिलाफ लड़ाई में बाधाओं को पार करने और सामाजिक मानदंडों को फिर से परिभाषित करने में एकता और सामुदायिक भागीदारी की भावना को प्रदर्शित करता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल में ‘मन की बात’ में इस बात पर प्रकाश डाला कि 10 लाख से अधिक टीबी रोगियों को 85,000 से अधिक नि-क्षय मित्रों ने गोद लिया है, जिसके लिए बच्चे भी आगे आए हैं। उन्होंने भारतीय गाँवों से टीबी को जड़ से उखाड़ने के लिए इस पहल में संसाधन जुटाने और सरपंचों की भागीदारी की भी सराहना की, जहाँ वे तपेदिक के अत्यधिक रोगियों के

बोझ का सामना करते हैं। नि-क्षय मित्र अभियान के तहत टीबी मरीज़ों को दी गई आर्थिक मदद एक हज़ार करोड़ रुपये तक पहुँच गई है।

इसके अलावा, टीबी नियंत्रण के लिए एक वेब-सक्षम रोगी प्रबन्धन प्रणाली नि-क्षय, राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (NTIP) के तहत संचालित की जाती है। इसका उपयोग देश भर में विभिन्न स्तरों पर स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा राष्ट्रीय टीबी निगरानी प्रणाली के रूप में और देश भर की प्रयोगशालाओं से विभिन्न प्रकार के परीक्षण के ऑर्डर करने, उपचार विवरण रिकॉर्ड करने, उपचार पालन की निगरानी करने और देखभाल प्रदाताओं के बीच मामलों को स्थानांतरित करने के लिए भी किया जाता है। सरकार नि-क्षय पोषण योजना के तहत इलाज पूरा होने तक नि-क्षय में पंजीकृत सभी टीबी रोगियों को हर महीने मुफ्त पोषण सहायता भी प्रदान करती है।

सरकार ने 2018 में टीबी रोगियों के लिए डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर सुविधा शुरू की, जिसके परिणामस्वरूप उनके बैंक खातों में लगभग 2,000 करोड़ रुपये की राशि सीधे अंतरित की गई, जिससे टीबी का इलाज करा रहे लगभग 75 लाख रोगियों को लाभ हुआ। वाराणसी में वन वर्ल्ड टीबी शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री ने टीबी-मुक्त पंचायत, लघु टीबी निवारक उपचार (TPT) और टीबी के लिए परिवार-केंद्रित देखभाल मॉडल सहित विभिन्न पहलों की भी शुरुआत की।

नि-क्षय मित्र अभियान के माध्यम से टीबी रोगियों को गोद लेकर भारत इस बीमारी से प्रभावित लोगों के साथ लम्बे समय से चले आ रहे भेदभाव को चुनौती देते हुए समावेशिता और सहानुभूति की संस्कृति को बढ़ावा दे रहा है। सार्वजनिक और निजी सहयोग की सीमा से परे जाकर सरकार ने सभी को टीबी-मुक्त भारत के लक्ष्य में भाग लेने और योगदान करने के लिए प्रेरित किया है। टीबी-मुक्त भारत के विज़न को प्राप्त करने के प्रयास में दिलों को छू लेने वाला यह आंदोलन, एकता और करुणा की शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है।

Q क्या टीबी रोगियों के लिए कोई सरकारी सहायता है?

सरकारी अस्पतालों में टीबी की प्रत्येक दवा और टीबी का निदान निःशुल्क है। निजी अस्पताल में भी उपचार और लाभ समान हैं।

Q क्या क्षय रोग का इलाज सम्भव है?

DOTS (डायरेक्टली ऑब्ज़र्व्ड ट्रीटमेंट, शॉर्ट कोर्स) से टीबी का इलाज सम्भव है। रोगी को कम-से-कम छह महीने तक, टीबी के प्रकार के आधार पर दवाएँ सख्ती से लेनी चाहिए।

Q क्या टीबी की दवाओं के कोई दुष्प्रभाव हैं?

आम दुष्प्रभावों में खुजली, गैस्ट्राइटिस, दृष्टि का धुँधलापन, बहरापन और थायरॉयड विकार शामिल हैं, जो जोड़ों के दर्द का कारण बन सकते हैं। सभी दुष्प्रभाव दो महीने में ठीक हो जाते हैं, जब तक कि शरीर इसके अनुकूल नहीं हो जाता। डॉक्टर की सलाह मिलने तक दवा लेते रहें।

Q टीबी के इलाज में इतना समय क्यों लगता है?

ऐसा इसलिए है, क्योंकि जीवाणु माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस धीरे-धीरे बढ़ता है। यदि दवा का नियमित रूप से सेवन नहीं किया जाता है, तो गुप्त बैक्टीरिया सक्रिय हो सकते हैं और दोबारा बीमारी का कारण बन सकते हैं। इसलिए ऐसी किसी भी घटना से बचने के लिए दवाओं का लम्बे समय तक सेवन करना आवश्यक है।

सामाजिक क्रांति के अग्रदूत : नि-क्षय मित्र

भारत ने संकल्प किया है 2025 तक टीबी मुक्त भारत बनाने का। एक समय था, जब टीबी का पता चलने के बाद परिवार के लोग ही दूर हो जाते थे, लेकिन ये आज का समय है, जब टीबी के मरीज को परिवार का सदस्य बनाकर उनकी मदद की जा रही है। इस क्षय रोग को जड़ से समाप्त करने के लिए नि-क्षय मित्रों ने मोर्चा सम्भाल लिया है।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

भारत सरकार ने नि-क्षय मित्र अभियान शुरू किया, जो नागरिकों से टीबी मरीज़ों के पोषण सम्बन्धी सहायता सहित विभिन्न तरीकों से उनको अपनाने और उनका समर्थन करने का आह्वान करता है ताकि उनकी उपचार यात्रा में कठिनाई न हो। यह अभियान टीबी के बारे में जागरूकता बढ़ाने, उससे जुड़े पूर्वाग्रहों को दूर करने के साथ-साथ सामुदायिक स्वामित्व और संसाधनों के निर्माण में उपयोगी साबित हुआ है। गाँवों और पंचायतों में हज़ारों लोगों ने खुद आगे आकर टीबी मरीज़ों को अपनाया है। इतना ही नहीं; कई बच्चे ऐसे भी हैं, जो टीबी मरीज़ों की मदद के लिए आगे आए हैं।

प्रधानमंत्री ने कुछ नि-क्षय मित्रों का ज़िक्र किया, जो भारत को टीबी मुक्त बनाने के लिए तत्पर हैं।

किन्नौर की एक ग्राम पंचायत के प्रधान और नि-क्षय मित्र ज्ञान सिंह अपने ब्लॉक में टीबी रोगियों को हर ज़रूरी मदद मुहैया करा रहे हैं। वह अन्य लोगों को भी सक्रिय रूप से टीबी रोगियों को गोद लेने के लिए प्रेरित कर रहे हैं ताकि उनकी पोषण सम्बन्धी आवश्यकताओं और उपचार में सहायता मिल सके।

नि-क्षय मित्र, दिकर सिंह मेवाड़ी ने नैनीताल के एक गाँव के छह टीबी रोगियों को गोद लिया है। उन्होंने कहा :

"मैं हमारे प्रधानमंत्री मोदीजी का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने 'मन की बात' में मेरा नाम लिया। मुझे नि-क्षय मित्र के बारे में तब पता चला, जब प्रधानमंत्री के 2025 तक भारत को टीबी मुक्त बनाने के मिशन के तहत हर जगह नि-क्षय मित्र योजना के बारे में जागरूकता पैदा करने का निर्देश दिया गया। फिर मैं नि-क्षय मित्र बना। मुझे बहुत ख़ुशी है कि जिनको ज़रूरत थी, मैं उनकी सहायता कर सका। जब TB पीड़ित मरीज़ ठीक हुए तो मुझे अच्छा लगा। मैं सबको यह सन्देश देना चाहता हूँ कि अगर इस पहल में मेरी तरह और लोग भी जुड़ें तो TB मुक्त भारत होने में समय नहीं लगेगा।"

बच्चों का अनूठा योगदान

भारत को टीबी मुक्त बनाने के अभियान में हमारे बच्चे और युवा साथी भी पीछे नहीं हैं। वे भारत में टीबी के ख़िलाफ़ लड़ाई में भी अपनी करुणा और उदारता दिखा रहे हैं। नलिनी सिंह, मीनाक्षी और बाश्वर मुखर्जी जैसे बच्चों के बारे में सुनकर ख़ुशी होती है, जो टीबी मुक्त भारत अभियान के लिए अपना योगदान दे रहे हैं। हिमाचल प्रदेश के ऊना की 7 वर्षीय बच्ची नलिनी सिंह अपनी पॉकेट मनी का उपयोग टीबी रोगियों की मदद के लिए कर रही है। मध्य प्रदेश के कटनी ज़िले की 13 वर्षीय बच्ची मीनाक्षी और पश्चिम बंगाल के डायमंड हार्बर के 11 वर्षीय बालक बाश्वर मुखर्जी ने भी अपनी गुल्लक से अपनी बचत टीबी मुक्त भारत अभियान के लिए दान की। इतनी छोटी उम्र में ही ये बच्चे बड़ा सोचने और अच्छा व्यवहार करने का उदाहरण पेश कर रहे हैं।

दीपा मलिक
पैरालिम्पियन, टीबी-मुक्त भारत अभियान की राष्ट्रीय राजदूत और नि-क्षय मित्र

जन भागीदारी और अपनेपन की भावना : नि-क्षय मित्र

मैं लगभग 5 वर्ष की थी, जब मेरे स्पाइनल कॉर्ड में ट्यूबरक्लोसिस (टीबी) का इन्फेक्शन पाया गया। मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूँ अपने माता-पिता की कि उन्होंने मेरी देखभाल की। उन्होंने इस बीमारी को समझा और डॉक्टर्स के जितने भी सुझाव थे, पूर्ण रूप से उनका पालन किया। मुझे ठीक होकर दुबारा चलने में 4 वर्ष लगे, क्योंकि मेरे पैरों पर इसका असर आया था। उस दौरान मैं देखती थी कि लोग हमसे मिलने नहीं आना चाहते थे और जब माँ कभी-कभी अस्पताल के चक्कर काटकर थक जाती थीं, तब लगता था कि दायित्व सम्भालने के लिए कोई और आ जाए। बचपन की यही बात मुझे याद रह गई थी कि किसी लम्बी बीमारी को झेलने में थोड़ी आसानी हो जाती है, जब मदद के चार हाथ आगे आते हैं।

मुझे प्रेरणा शायद वहीं से मिली और जब मेरे स्पाइनल कॉर्ड ट्यूमर्स दुबारा आ गए और मैं दुबारा दिव्यांग बनी, तब भी मैंने काफ़ी बीमारी झेली, हालाँकि तब यह ट्यूबरक्लोसिस के कारण नहीं था। मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूँ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की, जिनकी हर पहल जन भागीदारी होती है। उनकी सोच यह है कि हमारा नया भारत स्वस्थ भारत हो और जिस प्रकार हमने पोलियो पर जीत हासिल की, ठीक उसी प्रकार 2025 तक हमें भारत को TB-मुक्त बनाना है और यह तभी होगा, जब इसके बारे में चर्चा होगी, हम लोग मित्र बनकर टीबी मरीज़ों की सहायता करेंगे और एकजुट होकर टीबी के खिलाफ़ जंग छेड़ेंगे।

लेकिन इस उद्देश्य को पाने में सबसे बड़ी बाधा यह है कि लोगों में इसकी जानकारी कम है और पहले से जितनी भी जानकारी है, वह बड़ी नेगेटिव है कि यह छूत की बीमारी है, लाइलाज है या यह कोई अभिशाप है। लोगों को ज्ञान ही नहीं है कि केंद्र सरकार द्वारा टीबी-मुक्त भारत के लिए मुफ़्त इलाज, डॉक्टर से दवाइयाँ और नि-क्षय मित्र जैसी योजनाएँ तैयार हैं। दूसरी चीज़ यह कि इस बीमारी का इलाज बहुत लम्बा है, जिसमें आपको लगातार दवाई खाते रहना है और पौष्टिक आहार लेना है, लोग ऐसा नहीं कर पाते। एक और बड़ी समस्या यह है कि आइडेंटिफिकेशन ऑफ़ सिम्पटम्स में ही लोग देर कर देते हैं और जब सिम्पटम्स ढूँढ भी लेते हैं तो फिर इन्हीं टीबी ग्रसित लोगों को बिल्कुल अलग कर देते है। इससे उनकी सेवा नहीं हो पाती, उनका इलाज नहीं हो पाता। जब नि-क्षय मित्र बनकर लोग आते हैं, आपका हाथ थामते हैं, तब समाज के अंदर फैली नकारात्मक सोच मिटती है।

मुझे बहुत स्वाभिमान महसूस होता है कि मुझे टीबी-मुक्त भारत राष्ट्रीय अभियान का राजदूत नियुक्त किया गया और मुझे रोल मॉडल के रूप में देखा जाता है। मैं यह अपना दायित्व मानती हूँ कि मैं टीबी मरीज़ों से मिलूँ और उन्हें अवेयर करूँ। मैंने लगभग 10 टीबी मरीज़ों को गोद लिया है और मैं स्वयं उन्हें भोजन देने जाती हूँ। मुझे काफ़ी अच्छा लगता है कि मेरी आय का कुछ हिस्सा उनकी सेवा में जाता है। कई बार जब मैं विदेश में होती हूँ, तब मैं उनसे टेलीफ़ोन पर या वीडियो कॉल से संवाद करती हूँ। मेरा यह प्रयत्न रहता है कि जिस भी डॉक्टर के तहत टीबी मरीज़ इलाज ले रहे हैं, उनसे भी मैं बातचीत करूँ कि पेशेंट्स कैसे हैं ताकि अकाउंटेबिलिटी रहे। मेरे अडोप्ट किए

हुए दो पेशेंट्स की दवाई अगले महीने समाप्त हो जाएगी और बाकियों की भी सेहत सुधर रही है।

सरकार ने टीबी के उन्मूलन के लिए जो कदम उठाए हैं, उसका बहुत इम्पैक्ट हुआ है। मैं खुद इस मुहिम से काफ़ी समय से जुड़ी हूँ, गाँव खेड़े में भी जाती हूँ, शहरों में भी इसके बारे में चर्चा करती हूँ और मुझे सबसे अच्छी बात यह लगती है कि बच्चे भी टीबी चैम्पियन बन रहे हैं। बड़े लोगों के साथ छोटे-छोटे बच्चे भी, जो सर्वाइवर हैं, अब खुद टीबी की नॉलेज अपने-अपने एरिया में दे रहे हैं। जैसे ही कोई इनिशिएटिव देशवासियों का अपना हो जाता है और जिसमें ज़िम्मेदारी की भावना आ जाती है, लोग उसमें बढ़-चढ़ के भाग लेते हैं। इससे लोगों को गर्व का एहसास होता है और आत्मा को शांति मिलती है कि इन्सान होने के नाते हम किसी और इन्सान के काम में आ सके। नि-क्षय मित्र एक बहुत ही सुंदर मुहिम है और मैं खुद कह रही हूँ कि 10 में से 30 प्रतिशत रोगी की इम्प्रूवमेंट तो एक साल में ही दिखती है।

नि-क्षय मित्र के पीछे सबसे बड़ी सोच यही थी कि कम्युनिटी की भागीदारी से अपनेपन की भावना पैदा हो। इस बीमारी से जुड़ी जो तिरस्कृत भावना और एक नकारात्मक सोच है, वह हटाने के लिए ही नि-क्षय मित्र की शुरुआत की गई, जिससे आपस में एक-दूसरे को सम्भालने और मित्रता की भावना आ जाए। इससे अपने आप में आधी जीत हो जाती है, जिससे सफल इलाज की जाँच और दवाई लेना आसान हो जाता है, क्योंकि मानसिक रूप से जब आप खुश महसूस करते हैं तो आप लम्बे इलाज के लिए भी अपना हौसला रखते हैं।

हमारा भारत देश बहुत विशाल है, 80 प्रतिशत लोग गाँवों में रहते हैं और हमारी पॉपुलेशन भी बहुत ज़्यादा है। जो हमारे ज्योग्राफिकल, इकोनॉमिकल चैलेंज हैं, अलग-अलग तबके के लोग जब टीबी से ग्रसित होते हैं तो उनको ट्रैक करना

और उन्हें सहायता पहुँचाना अपने आप में एक बहुत बड़ा चैलेंज है। मैं पॉलिसी मेकर्स को बहुत बड़ा धन्यवाद देना चाहूँगी कि उन्होंने एक मरीज़ की सोच को समझा। इसके लिए उन्होंने फ्री जाँच, फ्री इलाज केंद्र, फ्री दवाई पहुँचाने की मुहिम शुरू की। मैं हमारे प्रधानमंत्री जी और सरकार की सराहना करती हूँ कि उन्होंने नि-क्षय मित्र योजना का प्रारम्भ किया। मेरा लोगों से निवेदन है कि प्रधानमंत्री जी का आह्वान सुनें और जनभागीदारी में जुड़ें। एक इन्सान जब दूसरे इन्सान की मदद के लिए उतरता है, तो इससे बेहतर कार्य क्या हो सकता है। अगर मैं एक दिव्यांग महिला होकर 10 लोगों के इलाज का बीड़ा उठा सकती हूँ, उनकी ज़िन्दगी में एक मित्र बनकर उनके पौष्टिक आहार और इलाज का ध्यान रख सकती हूँ, तो कम-से-कम एक मरीज़ का नि-क्षय मित्र हर व्यक्ति को बनना चाहिए। अगर ऐसा हुआ तो निश्चित ही हम 2025 तक भारत को टीबी-मुक्त बना लेंगे। टीबी पेशेंट्स से भी मेरा एक निवेदन है कि बीमारी लम्बी है, पर अपना दिल छोटा न करें और हार नहीं मानें। हम सब आपके साथ हैं, हमारे देश के प्रधानमंत्री आपके साथ हैं और ढेर सारे मित्र और टीबी चैम्पियन आपके साथ हैं।

दीपा मलिक का साक्षात्कार सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें

भारत को नि-क्षय मित्र अभियान की आवश्यकता क्यों है?

1. टीबी रोगियों के उपचार परिणामों में सुधार के लिए अतिरिक्त रोगी सहायता प्रदान करने के लिए
2. **2025** तक भारत को टीबी मुक्त बनाने में सामुदायिक भागीदारी बढ़ाने के लिए
3. मरीज़ों की आरोग्य प्राप्ति की यात्रा पूरी करने में मदद करने के लिए निर्वाचित प्रतिनिधियों, कॉरपोरेट्स, गैर सरकारी संगठनों और व्यक्तियों को दाता बनने हेतु शामिल करने के लिए

प्रगति अब तक

- टीबी रोगियों के पंजीकरण में **56%** की वृद्धि
- टीबी रोगियों की सहायता के लिए **85,000+** से अधिक नि-क्षय मित्र पंजीकृत हैं
- 79 लाख से अधिक रोगियों को **2,012 करोड़** रुपये से अधिक का वितरण किया गया।
- भारत में दवा प्रतिरोधी टीबी 2021 में **20%** की कमी देखी गई
- भारत में टीबी के मामलों में **18%** की गिरावट
- **9.55 लाख** टीबी मरीज़ों को नि-क्षय मित्रों ने अपनाया

मियावाकी विधि

भारत के हरित आवरण का विस्तार

मियावाकी तकनीक क्या है?

इसका नाम जापानी वनस्पतिशास्त्री अकीरा मियावाकी के नाम पर रखा गया है। इस विधि में एक छोटे से क्षेत्र में देसी पेड़ों की कई प्रजातियों को रोपा जाता है।

इस पद्धति की शुरुआत 1970 के दशक के दौरान एक छोटे से भूमि क्षेत्र पर जंगल बनाने के लिए हुई थी।

मियावाकी जंगल आत्मनिर्भर होते हैं और इन्हें पानी और खाद जैसे नियमित रखरखाव की आवश्यकता नहीं होती।

इस तकनीक से 300 साल में प्राकृतिक रूप से उगने वाला घना जंगल 30-35 साल में तैयार हो जाता है।

> मियावाकी वनों के माध्यम से हम पृथ्वी और प्रकृति को हरा-भरा और स्वच्छ बनाने में योगदान दे सकते हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(102वें 'मन की बात' सम्बोधन में)

जापान से शुरू हुई मियावाकी तकनीक भारत में तेज़ी से फैल रही है, जो बंजर मिट्टी को हरे-भरे मियावाकी जंगलों में बदल रही है। देश के विभिन्न हिस्सों में जंगल बनाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के नागरिक आगे आ रहे हैं। अपने 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने भारत में विभिन्न मियावाकी वन बनाने की प्रेरक कहानियों का उल्लेख करने के साथ-साथ मियावाकी वनों के लाभों पर प्रकाश डाला।

मियावाकी तकनीक के लाभ

- 10 गुना तेज़ी से बढ़ते हैं
- 30 गुना घने होते हैं
- शोर और धूल कम करने में 30 गुना बेहतर होते हैं
- 100 गुना अधिक जैव विविधता वाले होते हैं
- कार्बन डाईऑक्साइड अवशोषण में 30 गुना बेहतर होते हैं

मियावाकी वनों का महत्त्व

- भारत की राष्ट्रीय वन नीति के तहत निर्धारित भूमि क्षेत्र के 33 प्रतिशत तक वन क्षेत्रों को फिर से विकसित करने के लक्ष्य को प्राप्त करने का एक बड़ा अवसर प्रदान करते हैं।
- भारत को 2.5 से 3 बिलियन टन कार्बन डाईऑक्साइड का अतिरिक्त कार्बन सिंक बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं।
- भूमि की कमी वाले भारतीय शहरों को फिर से हरा-भरा बना सकते हैं।
- विकासशील भारत में वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण जैसे विभिन्न पर्यावरण सम्बन्धी मुद्दों पर अंकुश लगाने में मदद कर सकते हैं।
- शहरों में छाया प्रदान करके और सतह के तापमान को कम करके गर्मी को कम करने में योगदान दे सकते हैं।
- देशी पौधों की प्रजातियों के संरक्षण को बढ़ावा देकर और वन्यजीव आवास बनाकर भारत की समृद्ध जैव विविधता को बढ़ावा दे सकते हैं।

विद्यावनम्
मियावाकी तकनीक का उपयोग करके बनाया गया एक लघु वन

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में केरल के शिक्षक **राफ़ी रामनाथ** के प्रयासों पर प्रकाश डाला, जिन्होंने मियावाकी तकनीक का उपयोग करके एक लघु वन बनाया। एक शिक्षक होने के नाते राफ़ी रामनाथ अपने छात्रों को प्रकृति और पर्यावरण के महत्त्व के बारे में भी शिक्षित कर रहे हैं। उनका लघु वन, जिसे 'विद्यावनम्' के नाम से भी जाना जाता है, अब एक जैव विविधता क्षेत्र बन गया है।

“ मावेलिकारा ब्लॉक पंचायत के योजना बोर्ड सदस्य के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान मैंने पंचायत परिसर में मियावाकी जंगल लगाया। यह देखकर मेरे स्कूल प्रबन्धक ने मुझसे हमारे स्कूल में भी ऐसा जंगल लगाने के लिए कहा। इस तरह विद्यावनम् का जन्म हुआ। आज विद्यावनम् में 115 प्रजातियों के लगभग 465 पेड़ हैं। मियावाकी वन की खूबी यह है कि यह मिट्टी की जल धारण क्षमता और उर्वरता को बढ़ाता है, जिससे पौधों को उनकी सामान्य वृद्धि दर से अधिक तेज़ी से बढ़ने में मदद मिलती है। सितम्बर, 2021 में विद्यावनम् में लगाए गए पौधे छह साल की उम्र के पेड़ के बराबर विकास प्राप्त कर चुके हैं। आज इन जंगलों में कई पक्षी और गिलहरियाँ हैं, जो परागण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हम गर्व से कह सकते हैं कि विद्यावनम् इन प्राणियों के लिए जैव विविधता का स्वर्ग बन गया है। हालाँकि मैं 2009 से वनीकरण और प्रकृति संरक्षण की दिशा में अपना योगदान दे रहा हूँ, मियावाकी मॉडल ने मुझे दिखाया कि कैसे न्यूनतम समय में न्यूनतम स्थान में अधिकतम संख्या में पेड़ उगाए जा सकते हैं।

माननीय प्रधानमंत्री को अपने लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम में इन वनों के बारे में बात करते हुए सुनना अद्भुत है। मेरे पास इस खुशी और गर्व को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं कि प्रधानमंत्री ने खुद मेरे बारे में बात की। उनके उल्लेख ने मुझे हरित भारत बनाने और अपने छात्रों को शिक्षित करने की दिशा में और अधिक काम करने के लिए प्रेरित किया है। मैं पर्यावरण संरक्षण में और अधिक जिम्मेदारियाँ उठाने के लिए प्रतिबद्ध हूँ। ”

- राफ़ी रामनाथ, शिक्षक, केरल

मियावाकी वन से बन रहे शहर हरे-भरे

भारत में मौजूद विभिन्न मियावाकी जंगलों पर प्रकाश डालते हुए प्रधानमंत्री ने विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के लखनऊ के अलीगंज और गुजरात के केवड़िया में स्थित ऐसे जंगलों के बारे में बात की।

अलीगंज, लखनऊ

“इस मियावाकी जंगल की प्रेरणा क्षेत्र के निवासियों की माँग थी। उन्होंने हमसे इस क्षेत्र में वृक्षारोपण करने का आग्रह किया। फिर हमने मियावाकी तकनीक का उपयोग करके 700 वर्ग मीटर के क्षेत्र में 2,400 पेड़ लगाए। दो साल की अवधि में हमने पक्षियों और तितलियों की आबादी में वृद्धि देखी है। कई अन्य जानवर भी इस क्षेत्र में निवास करते हैं। हमने आस-पास के क्षेत्र में तापमान में भी उल्लेखनीय अंतर देखा है। यह इसमें शामिल सभी लोगों के लिए बहुत गर्व की बात है। इस जंगल के निर्माण के लिए प्रधानमंत्री ने स्वयं हमारे छोटे से प्रयास की सराहना की। तब से हमें लगातार लोगों से जंगल का दौरा करने के लिए अनुरोध प्राप्त हो रहे हैं।

- रवि कुमार सिंह, प्रभागीय वनाधिकारी, अवध रेंज

केवड़िया, गुजरात

“प्रधानमंत्री के 'मन की बात' में सम्मान मिलना इस कार्य में शामिल लोगों के लिए एक बड़ा प्रोत्साहन है। गुजरात के एकता नगर में बना मियावाकी जंगल अपने घने और विविध पारिस्थितिकी तंत्र के साथ कई लाभ प्रदान करता है। इसकी जड़ों का व्यापक संजाल मृदा संरक्षण और वर्षा जल संग्रहण में सहायता करता है। लगाई गई प्रजातियों की विविधता जानवरों के लिए निवास प्रदान करती है, जो इसे शहरी परिदृश्य के लिए एक आदर्श मॉडल बनाती है। यह तकनीक घने जंगलों के तेज़ी से विकास को सक्षम बनाती है, जिससे आगंतुकों को इन्हें अन्यत्र दोहराने के लिए प्रेरणा मिलती है। यहाँ मासिक रूप से 6,000 से अधिक छात्र, गैर सरकारी संगठन तथा वानिकी उत्साही आगंतुक आते हैं।”

- अग्निश्वर व्यास, वन संरक्षक, केवड़िया

राफ़ी रामनाथ के प्रयासों के बारे में अधिक जानने के लिए, QR कोड को स्कैन करें

दीपेन जैन
संस्थापक, फॉरेस्ट क्रिएटर्स

आर. के. नायर
सह-संस्थापक, फॉरेस्ट क्रिएटर्स

मियावाकी वन : सतत भविष्य की परिकल्पना

मियावाकी तकनीक, जिसका नाम इसके आविष्कारक डॉ. अकीरा मियावाकी के नाम पर रखा गया है, पारिस्थितिक इंजीनियरिंग की एक क्रांतिकारी पद्धति है। जापानी वनस्पतिशास्त्री और पादप पारिस्थितिकी के विशेषज्ञ डॉ. मियावाकी ने अपनी विशेषज्ञता से देसी पेड़ों के बीजों का प्रयोग करके बंजर भूमि में देसी जंगलों को बहाल किया। उनकी पद्धति में प्रति वर्ग मीटर सघन रूप से चार पेड़ तक लगाना शामिल है, जिसके परिणामस्वरूप वनों की कटाई और पोषक तत्वों की कमी वाली मिट्टी पर भी विविध वनों का तेज़ी से विकास होता है।

मियावाकी वन कई लाभ प्रदान करते हैं और स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये वन प्राकृतिक वायु फिल्टर के रूप में कार्य करते हैं, हवा को शुद्ध करते हैं और कार्बन डाईऑक्साइड हटाने में सहायता करते हैं। मियावाकी वन वायु, जल और जीवन के संरक्षण के लिए एक अनुकरणीय मॉडल के रूप में कार्य करते हैं।

हम इस अवधारणा को अपनाने के लिए प्रेरित हुए, क्योंकि हमारा मानना है कि आर्थिक विकास की हमारी कोशिश पर्यावरण की कीमत पर नहीं होनी चाहिए। इस विचारधारा के साथ हमने एक एनजीओ 'फॉरेस्ट क्रिएटर्स' शुरू किया। हमारा लक्ष्य भावी पीढ़ियों की भलाई के लिए मियावाकी तकनीक का उपयोग करके समूचे भारत में वनरोपण करना है। हम नवोन्वेषी मियावाकी विधि को अपनाते हैं, जो वनरोपण के लिए एक स्मार्ट, शत- प्रतिशत जैविक, जंगली और आत्मनिर्भर दृष्टिकोण है। फॉरेस्ट क्रिएटर्स में हम विकास और प्राकृतिक पर्यावरण के सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व में दृढ़ता से विश्वास करते हैं। हमारा मिशन तेज़ी से विकसित हो रही हमारी दुनिया के सन्दर्भ में वनों को फिर से परिभाषित करना है, जहाँ हम प्रगति और प्रकृति के संरक्षण के लिए प्रयास करते हैं। मियावाकी के माध्यम से हम न केवल वनीकरण करते हैं, बल्कि एक अनोखे तरीके से पृथ्वी के नाज़ुक पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली में भी योगदान देते हैं। 2014 के बाद से हम मियावाकी तकनीक का उपयोग करके 12 राज्यों में 20 लाख से अधिक पेड़ लगाकर 109 मियावाकी

> **आइए बच्चों को मियावाकी वन तकनीक से शिक्षित करें और युवा पीढ़ी को बदलाव का चैम्पियन बनने के लिए प्रेरित करें।**
> **-आर. के. नायर**

> **मियावाकी वन वायु, जल और जीवन के संरक्षण के लिए एक अनुकरणीय मॉडल के रूप में कार्य करते हैं।**
> **-दीपेन जैन**

वन बनाने में सफल हुए हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत बुनियादी ढाँचे के विकास में तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। हालाँकि पर्यावरण सम्बन्धी छोटी-मोटी रुकावटें हो सकती हैं, लेकिन इनके प्रभाव को कम करने के लिए उपाय किए जा सकते हैं। मियावाकी मॉडल को लागू करने के लिए चट्टानी पहाड़ों, नदी-तटों और रासायनिक तथा शहरी डम्प यार्ड जैसी बंजर भूमि की पहचान की जा सकती है और उसका उपयोग किया जा सकता है। यह मॉडल घने जंगलों का निर्माण करता है, जो प्रभावित क्षेत्र से लगभग सौ गुना अधिक कार्बन की मात्रा को अवशोषित करके पर्यावरणीय क्षति की भरपाई कर सकता है।

मियावाकी जंगल विकसित करने में स्थानीय पर्यावरण का विश्लेषण करना और देसी किस्मों सहित उपयुक्त पौधों का चयन करना शामिल है। मिट्टी की उर्वरता के लिए जैविक खाद का उपयोग किया जाता है, जिसे जेसीबी और खाद का उपयोग करके तैयार किया जाता है। जंगल को पाँच श्रेणियों के पौधों के साथ डिज़ाइन किया गया है, जो एक परतदार संरचना बनाते हैं। 1 से 2 साल के भीतर जंगल 12 से 15 फीट की ऊँचाई तक बढ़ जाता है। भले ही आपके पास सीमित भूमि उपलब्ध हो, आप प्रति वर्ग मीटर अधिकतम चार पेड़ लगाकर मियावाकी वन बना सकते हैं। यह पद्धति 50 से 100 वर्ग मीटर की छोटी भूमि पर भी प्रभावी है, जिसका उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता है।

प्रधानमंत्री ने हमेशा छोटे गाँवों के व्यक्तियों की उपलब्धियों को मान्यता दी है, जो भारत के विकास के प्रतीक के रूप में काम करते हैं। हम यह सुनकर बहुत रोमांचित हुए कि मोदी जी ने हाल में अपने 'मन की बात' सम्बोधन के दौरान मियावाकी वन तकनीक की अवधारणा की प्रशंसा की और लोगों को सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव डालने के लिए कहीं भी ऐसे वन स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया। अपने सम्बोधन के दौरान उन्होंने भुज में स्मृतिवन का भी उल्लेख किया। यह मियावाकी वन है, जिसे 2001 के गुजरात भूकम्प के पीड़ितों के स्मारक के रूप में बनाया गया था। यह परियोजना कच्छ के लोगों की हिम्मत और फिर से उठने के जज़्बे को प्रदर्शित करती है। प्रधानमंत्री ने जिस परियोजना की परिकल्पना मियावाकी पद्धति से निर्मित एक स्वप्निल जंगल के रूप में की थी, वह अब एक वास्तविकता बन गई है, जो देश-विदेश से पर्यटकों को आकर्षित करती है। न्यूनतम वर्षा वाली चट्टानी पहाड़ियों के बीच, पानी की कमी और अत्यधिक तापमान का सामना करते हुए यह जंगल 4.3 लाख से अधिक पेड़ों के साथ फलता-फूलता है और इसे भारत का अमेज़ॉन जंगल भी कहा जा सकता है। इसने अपने सामर्थ्य का प्रदर्शन करते हुए बिपरजॉय जैसे भयंकर तूफ़ानों का भी सामना किया है। कच्छ, जो कभी रण के लिए जाना जाता था, अब स्मृति वन के लिए भी मशहूर हो गया है।

जलवायु परिवर्तन में भारत का अग्रणी के रूप में उभरना और सरकार का पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देना, अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात है। पेरिस समझौते जैसे अंतरराष्ट्रीय सहयोग में हमारी भागीदारी जलवायु परिवर्तन को कम करने और संधारणीय भविष्य बनाने के लिए हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में हम पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है और प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में हमने वैश्विक मान्यता प्राप्त की है। हमें अब इन बातों पर आगे बढ़ना चाहिए और जलवायु परिवर्तन तथा पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए पहल करनी चाहिए।

प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किया गया मिशन LiFE (पर्यावरण के लिए जीवन शैली) भारत के युवाओं के लिए एक शक्तिशाली प्रेरणा के रूप में कार्य करता है, जो विकास हासिल करते हुए पर्यावरण की रक्षा के लिए देश की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। मिशन LiFE की परिकल्पना पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण के लिए भारत के नेतृत्व में वैश्विक जन आंदोलन के रूप में की गई है। इस मिशन को अपनाकर हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को चरितार्थ करते हुए सामूहिक रूप से बेहतर दुनिया बनाने की दिशा में काम कर सकते हैं।

हमारे प्रधानमंत्री के समर्थन और जागरूकता से मियावाकी तकनीक राष्ट्रीय स्तर पर प्रामाणिकता और मान्यता प्राप्त कर रही है। केवल सजावटी बगीचों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, आइए बच्चों को मियावाकी वन तकनीक से शिक्षित करें, जो छोटी जगहों में घने, विविध जंगल बनाने की एक सिद्ध विधि है और उन्हें आवासीय क्षेत्रों, स्कूलों तथा उद्योगों के पास और नदी या तालाब के किनारे मिनी मियावाकी जंगलों की स्थापना के लिए प्रोत्साहित करें। यह सार्थक सन्देश देकर हम युवा पीढ़ी को बदलाव का चैम्पियन बनने और सभी के लिए संधारणीय भविष्य के निर्माण की दिशा में सक्रिय कदम उठाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। एक व्यक्ति और एक राष्ट्र के रूप में हमें अपने पर्यावरण की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए और एक टिकाऊ तथा हरित भविष्य की दिशा में काम करना चाहिए।

श्वेत क्रांति 2.0

का गवाह बन रहा बारामूला

भारत विश्व में दूध का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। खाद्य और कृषि संगठन कॉर्पोरेट सांख्यिकी डेटाबेस (FAOSTAT) के उत्पादन आँकड़ों के अनुसार, भारत वर्ष 2021-22 में वैश्विक दूध उत्पादन में 24 प्रतिशत का योगदान देकर दुनिया में पहले स्थान पर है। पिछले आठ वर्षों के दौरान भारत में दूध उत्पादन में 51 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। नई श्वेत क्रांति के लिए सरकार के प्रयास की किसानों के जीवन में बदलाव में बड़ी भूमिका है और जम्मू-कश्मीर भी इसका अपवाद नहीं है। जैसा कि प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में कहा, बारामूला ज़िला इस नई क्रांति का प्रतीक बन रहा है।

पिछले कुछ वर्षों से जम्मू-कश्मीर प्रशासन UT को दूध उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने के लिए विशेष उपाय कर रहा है। केंद्र-प्रायोजित योजनाओं जैसे राष्ट्रीय गोकुल मिशन, राष्ट्रीय पशुधन मिशन, एकीकृत डेयरी विकास योजना, ए-हेल्प (अक्क्रेडिटेड एजेंट फ़ॉर हेल्थ एंड एक्सटेंशन ऑफ़ लाइवस्टॉक प्रोडक्शन) और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड की छत्रछाया में कई पहलों का सफ़ल कार्यान्वयन किया गया है।

UT में डेयरी उद्योग को प्रोत्साहन दिया गया, जिससे डेयरी फ़ार्म का चलन बढ़ रहा है और पढ़े-लिखे युवा भी इस उद्योग से जुड़ रहे हैं। प्रधानमंत्री ने अपने रेडियो कार्यक्रम में कहा कि पिछले दो-तीन वर्षों में बारामूला में 500 से अधिक डेयरी ईकाइयाँ स्थापित हुई हैं और अब ज़िले में सालाना 19.50 करोड़ लीटर दूध का उत्पादन होता है। उन्होंने बारामूला के उन निवासियों के बारे में भी बात की, जो डेयरी फार्मिंग से जुड़े हैं।

आबिद हुसैन के डेयरी उद्यम के बारे में जानने के लिए QR कोड स्कैन करें

"कोविड-19 की वजह से हमारे दूसरे व्यापार बंद हो गए थे तो मैंने सोचा कि मेरे पास ज़मीन और एक-दो पालतू जानवर हैं। क्यों न इसे डेयरी में बदला जाए जिससे कि मैं सुरक्षित तरीके से लोगों को अच्छे दूध की सप्लाई कर सकूँ। डिपार्टमेंट ऑफ़ एनिमल हस्बेंडरी ने काफी मदद की और हमारे फ़ार्म में जो भी दिक्कत होती है, डिपार्टमेंट अपनी टीम भेजकर उसको हल करता है। ऐसे नौजवान, जो बेरोज़गार हैं, उन्हें डिपार्टमेंट डेयरी फार्मिंग शुरू करने के लिए काफी सुविधाएँ उपलब्ध कराता है। आप डिपार्टमेंट जाकर अलग-अलग योजनाओं का पता लगा सकते हैं और उनका लाभ उठा सकते हैं। मुझे बहुत ख़ुशी हुई, जब प्रधानमंत्री ने मेरा नाम लिया और अब मैं इस डेयरी फ़ार्म को और बढ़ाना चाहता हूँ।"

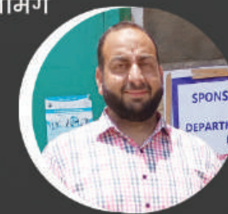

— वसीम अनायत
डेयरी फ़ार्मर, बारामूला

"2021 में मैंने अपना डेयरी फ़ार्म शुरू किया था। इससे पहले में UPSC की तैयारी कर रहा था। मैंने कश्मीर के पर्याप्त भू-संसाधन को देखते हुए सोचा कि क्यों न डेयरी फ़र्मिंग शुरू करूँ। हमारा डिपार्टमेंट ऑफ़ एनिमल हस्बेंडरी इसमें आम किसान की मदद कर रहा है। जब से मैंने यहाँ डेयरी शुरू की है तो लोगो को यहाँ पर 100 प्रतिशत शुद्ध और ऑर्गेनिक दूध आसानी से मिल रहा है। हमने अपने गाँवों में आउटलेट्स खोल रखे हैं, जहाँ से लोग आसानी से दूध ले सकते है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मोदी द्वारा मेरा नाम लिया जाना मेरे लिए काफी ख़ुशी की बात है, जिससे मुझे काम को आगे बढ़ाने के लिए काफी हौसला मिला है। मेरे लिए इससे बड़ा पुरस्कार और कोई नहीं हो सकता। मेरा नौजवानों को यही सन्देश है कि अगर वो चाहें तो आसानी से डेयरी फ़र्मिंग के सेक्टर में आ सकते हैं। फ्रेशर्स को एनिमल हस्बेंडरी डिपार्टमेंट गाइड करता है। जब मैंने यह काम शुरू किया तो बहुत सारी दिक्कत-परेशानी आई, लेकिन मैंने भी हार नहीं मानी और अपना काम जारी रखा, जिस वजह से आज यह दिन आया कि वज़ीर-ए-आज़म ने मेरा नाम लिया।"

— आबिद हुसैन
डेयरी फ़ार्म मालिक, बारामूला

वसीम अनायत के अनुभव के बारे में अधिक जानने के लिए QR कोड को स्कैन करें

आरम्भ से सुर्खियों तक

खेल जगत में वैश्विक मंच पर भारत का शानदार प्रदर्शन

"इससे पहले, जब हम अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के बारे में बात करते थे तो भारत का कहीं कोई नाम नहीं होता था, लेकिन आज विभिन्न अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में भारत की सफलता की सूची लम्बी है। यही हमारे युवाओं की असली ताकत है। ऐसे कितने ही खेल और प्रतियोगिताएँ हैं, जहाँ आज भारत पहली बार अपनी मौजूदगी दर्ज करवा रहा है।"

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के 102वें एपिसोड में)

पिछले 9 वर्षों में भारत ने वैश्विक स्तर पर खेल प्रदर्शन में उल्लेखनीय वृद्धि देखी है। टोक्यो में आयोजित ओलिम्पिक्स में 7 पदक लाने से लेकर पैरालिम्पिक्स में 19 पदक लाने तक भारत विभिन्न टूर्नामेंटों में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहा है। भारत की गौरवशाली खेल संस्कृति की ओर यह बदलाव विभिन्न योजनाओं और नीतियों के साथ एक महत्त्वपूर्ण व्यवहार और मानसिकता में परिवर्तन के साथ आया है, जो खेल को करियर के रूप में अपनाने के सपने को पूरा करने के लिए असंख्य युवाओं को प्रेरणा दे रहा है।

खेलो इंडिया : खेल संस्कृति को बढ़ावा देने, बुनियादी ढाँचे के विकास और युवा एथलीट्स को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए सशक्त बनाने की एक राष्ट्रव्यापी पहल। यह कार्यक्रम अपने खेलो इंडिया यूथ गेम्स, खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स और खेलो इंडिया स्कूल गेम्स के माध्यम से खेलों को बढ़ावा दे रहा है।

TOPS जूनियर : 2024 और 2028 ओलिम्पिक्स के लिए युवा एथलीटों को तैयार करना।

टारगेट ओलम्पिक पोडियम स्कीम (TOPS) : कोचिंग और अत्याधुनिक खेल सुविधाओं और संस्थानों के माध्यम से ओलिम्पिक्स और पैरालिम्पिक्स खेलों के लिए भविष्य के पदक दावेदारों को ढूँढना, विकसित करना और तैयार करना।

मिशन ओलम्पिक 2024 : 2024 ग्रीष्मकालीन ओलिम्पिक्स में भारत को 50 पदक जीतने में मदद करने के लिए एक अल्पकालिक और मध्यम अवधि की कार्य योजना तैयार की गई है।

भारत की खेल प्रतिभा ने विभिन्न टूर्नामेंटों में जीत के साथ वैश्विक मंच को रोशन किया

- **भारतीय जूनियर महिला टीम** ने पहली बार **महिला जूनियर एशिया कप 2023** जीता
- **कॉमनवेल्थ गेम्स 2022 में 61 मेडल**
- **भारतीय जूनियर पुरुष टीम** 2023 में **हॉकी जूनियर एशिया कप** चैम्पियन बनी
- टोक्यो में **अब तक का सर्वश्रेष्ठ ओलिम्पिक्स** (7 पदक) और पैरालिम्पिक्स (19 पदक)
- **आईएसएसएफ जूनियर विश्व कप 2023 में प्रथम स्थान**
- **पुरुष बैडमिंटन टीम** ने 2022 में पहली बार **थॉमस कप** का खिताब जीता
- **आईएसएसएफ विश्व कप 2023 में दूसरा स्थान**
- **TOPS कार्यक्रम** के अंतर्गत TOPS कोर ग्रुप में 98 एथलीट्स और TOPS डेवलपमेंट ग्रुप में 182 एथलीट्स का समर्थन किया जा रहा है

राष्ट्रीय खेल प्रतिभा खोज पोर्टल : युवाओं में शीर्ष क्षमता की पहचान करने के लिए एक राष्ट्रीय खेल प्रतिभा खोज पोर्टल स्थापित किया गया, जहाँ युवा अपनी उपलब्धियों को अपलोड कर सकते हैं। शॉर्टलिस्ट किए गए लोगों को ट्रायल के लिए आमंत्रित किया जाता है, जिन्हें पास करने के बाद वे भारतीय खेल प्राधिकरण के कार्यक्रम में भाग ले सकते हैं।

फिट इंडिया मूवमेंट : फिटनेस की संस्कृति को लोकप्रिय बनाने और स्वदेशी खेलों को प्रोत्साहित करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी जन आंदोलन।

राष्ट्रीय खेल विज्ञान और अनुसंधान केंद्र : इसका उद्देश्य विशिष्ट एथलीटों के उच्च प्रदर्शन के सम्बन्ध में उच्च स्तरीय अनुसंधान, शिक्षा और नवाचार का समर्थन करना है।

भारत के दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए प्रशिक्षण सुविधाएँ और अंतरराष्ट्रीय मानक बुनियादी ढाँचा प्रदान करने के लिए मध्य प्रदेश के ग्वालियर में **दिव्यांग खेल केंद्र** स्थापित किया जा रहा है।

भारतीय हॉकी का पुनरुत्थान

हॉकी से देश का प्रेम दशकों पुराना है, जिसमें भारतीय हॉकी टीम ने उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। अपनी कलात्मकता, फुर्ती और हॉकी की कुशलता के लिए पहचाने जाने वाले भारतीय हॉकी खिलाड़ियों ने अपने उत्कृष्ट खेल से प्रशंसकों को मंत्रमुग्ध कर दिया है। जून के महीने में जब भारतीय पुरुष और महिला हॉकी टीम ने क्रमशः पाकिस्तान और कोरिया को हराकर जूनियर एशिया कप जीता, तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में इस बात की प्रशंसा की कि कैसे उन्होंने तिरंगे का गौरव बढ़ाया है।

हमारी दूरदर्शन टीम ने भारतीय महिला हॉकी टीम के कप्तान **प्रीति** और **उत्तम सिंह** से उनकी प्रेरणा और जीत के बारे में बात की।

"बहुत अच्छा लग रहा है कि देश के प्रधानमंत्री हमारा इतना समर्थन कर रहे हैं और समय निकालकर ट्वीट कर भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दे रहे हैं। खेलो इंडिया और टारगेट ओलिम्पिक्स पोडियम स्कीम जैसी सरकारी योजनाओं ने भोपाल, दिल्ली और बेंगलुरु में अच्छा बुनियादी ढाँचा और प्रशिक्षण के अवसर प्रदान किए हैं, जिसने हमें समर्थन दिया और देश के लिए स्वर्ण जीतने के लिए प्रेरित किया। पूरी टीम ने अपना 100 प्रतिशत प्रयास किया, जिसकी बदौलत हमने जूनियर एशिया कप 2023 जीता। मैं खिलाड़ी बनने की इच्छुक सभी युवा लड़कियों को सलाह दूँगी कि कड़ी मेहनत ही कुंजी है। मेरा मानना है कि अगर कोई व्यक्ति समझदारी से मेहनत करे तो शानदार सफलता हासिल कर सकता है।"

-प्रीति, कप्तान,
भारतीय महिला हॉकी टीम

"अगर प्रधानमंत्री कुछ भी ट्वीट करते हैं, तो पूरी दुनिया उसे देखती है। यह सुनकर बहुत खुशी हुई कि उन्होंने 'मन की बात' में हमारा ज़िक्र किया और हमारी जीत की खबर पूरी दुनिया को दी। खेलो इंडिया जैसी सरकारी योजनाओं ने लाखों युवाओं को बुनियादी ढाँचा और छात्रवृत्ति प्रदान करके युवा एथलीटों को लाभान्वित किया है। जब हम मैदान पर खेलते हैं तो हमारा लक्ष्य मैच से पहले की गई सभी ट्रेनिंग को शामिल करना, अपने कोच के निर्देशों को लागू करना और अपना पूरा प्रयास करने पर ध्यान केंद्रित करना होता है। युवा एथलीटों के लिए यही मेरा सन्देश है।"

-उत्तम सिंह, कप्तान,
भारतीय पुरुष हॉकी टीम

बाधाओं को तोड़ते व एथलेटिक उत्कृष्टता हासिल करते एथलीट्स

मुरली श्रीशंकर, भारतीय एथलीट

भारतीय एथलीट मुरली श्रीशंकर ने एथलेटिक्स में उल्लेखनीय प्रभाव डाला है। हाल ही में उन्होंने पेरिस डायमंड लीग में पुरुषों की लम्बी कूद स्पर्धा में 8.09 मीटर के प्रभावशाली प्रयास से कांस्य पदक जीता। समर्पण, एथलेटिक्स और अपने खेल के प्रति जुनून के साथ मुरली ने भारतीय एथलेटिक्स में शीर्ष स्थान हासिल किया है। उन्होंने एशियाई खेलों और राष्ट्रमंडल खेलों जैसी प्रतिष्ठित प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। उनकी सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से है- जब 2018 में उन्होंने राष्ट्रीय अंतर-राज्य एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में लम्बी कूद स्पर्धा में 8.20 मीटर का राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया। मुरली की सफलता का श्रेय उनकी असाधारण तकनीक, असाधारण शक्ति और अविश्वसनीय गति को दिया जा सकता है। मुरली का अंतिम लक्ष्य विश्व मंच पर अपनी प्रतिभा और समर्पण का प्रदर्शन करते हुए ओलम्पिक में भारत का प्रतिनिधित्व करना है।

अन्यतम राजकुमार, भारतीय पैरा स्विमर

असम के अन्यतम राजकुमार एक असाधारण और प्रेरणादायक पैरा-तैराक हैं, जिन्होंने शारीरिक चुनौतियों का सामना करने के बावजूद उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। अटूट दृढ़ संकल्प और समर्पण के साथ वह पैरा-तैराकी समुदाय में एक जबरदस्त ताकत बन गए हैं। अन्यतम ने 2015 में लॉस एंजिल्स के विश्व ग्रीष्मकालीन खेलों (विशेष ओलम्पिक) में भारत के लिए पहला पैरालम्पिक तैराकी स्वर्ण पदक जीता। वह एक रोल मॉडल के रूप में कार्य करते हैं और समावेशिता की वकालत करते हैं और अपने मंच का उपयोग विकलांगों को प्रेरित करने के लिए करते हैं। वह खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में भाग लेने वाले पहले दिव्यांग एथलीट बने। उन्होंने वर्ल्स ओशिनिया एशिया गेम्स, ब्रिस्बेन 2022 में तीन कांस्य पदक भी जीते। अन्यतम अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हुए पैरा-स्विमिंग और दर्शनीय स्थलों की दुनिया में पहचान बना रहे हैं।

भारतीय हॉकी : परिवर्तन, विजय और गौरवशाली भविष्य की यात्रा

दिलीप टिर्की
अध्यक्ष भारतीय हॉकी महासंघ
(हॉकी इंडिया)

अपनी समृद्ध विरासत के साथ भारतीय हॉकी, एक ऐसा खेल है, जो जुनून, कौशल और राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। सफलता की विरासत और हाल में हासिल पुनर्जीवन के साथ भारतीय हॉकी लगातार देश का ध्यान आकर्षित कर रही है और नई पीढ़ी के खिलाड़ियों को प्रेरित कर रही है। हाल के वर्षों में, इस खेल ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ और सम्मानजनक पहचान हासिल की है और महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। विशेष रूप से हमारे जूनियर स्तर के कार्यक्रम का कार्यान्वयन बेहद सफल रहा है, जिसके परिणामस्वरूप उत्कृष्ट प्रदर्शन और रिकॉर्ड-तोड़ उपलब्धियाँ हासिल हुई हैं। इस वर्ष हमारी महिला टीम ने कोरिया गणराज्य पर 2-1 की रोमांचक जीत के साथ पहली बार एशिया कप चैम्पियनशिप जीती, जबकि पुरुष टीम रोमांचक मुकाबले में पाकिस्तान को 2-1 से हराकर विजयी हुई। महिला एथलीटों ने बेहतर कोचिंग, मैच के अधिक अवसर और अधिक एक्सपोज़र का लाभ उठाते हुए जूनियर और सब-जूनियर स्तर के कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का प्रदर्शन करते हुए अभूतपूर्व उत्कृष्टता प्रदर्शित की है। जूनियर रैंक से उभरती ऐसी होनहार प्रतिभाओं के साथ हम भारतीय हॉकी की अगली पीढ़ी के लिए उज्ज्वल भविष्य की आशा करते हैं।

देश के भविष्य के लिए अपने युवाओं के महत्त्व को पहचानते हुए हॉकी इंडिया ने इस साल एक नया ग्रास रूट डेवलपमेंट प्रोग्राम शुरू किया, जिसका उद्देश्य सब-जूनियर और जूनियर स्तरों में सुधार करना है। इस रणनीतिक कदम का उद्देश्य युवा खिलाड़ियों को उचित प्रदर्शन, बेहतर प्रतिस्पर्धा और व्यापक प्रशिक्षण प्रदान करना है। इसके अलावा महासंघ कौशल को बढ़ाने और हर खेल में पदक की संख्या बढ़ाने के लिए वरिष्ठ खिलाड़ियों पर ध्यान केंद्रित करने को महत्त्व देता है। ज़मीनी स्तर पर कार्यक्रमों को मज़बूत करने और अंडर-17, अंडर-19 और अंडर-21 टीमों सहित कोर ग्रुप के विकास पर ज़ोर देते हुए हॉकी इंडिया उन्हें जूनियर विश्व कप के लिए तैयार करने हेतु समर्पित है। खेल में लगातार सुधार राष्ट्रीय टीमों के प्रदर्शन में दिखाई दे रहा है। भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने टोक्यो ओलम्पिक 2020 में जर्मनी पर 5-4 की रोमांचक जीत के साथ 41 वर्षों में अपना पहला ओलम्पिक पदक सुरक्षित करने के लिए 1-3 से पिछड़ने के बाद यादगार वापसी की थी। महिला हॉकी टीम ने भी फिटनेस, खेल रणनीति, कौशल और एकजुटता में महत्त्वपूर्ण सुधार किया है।

हमारी महिला खिलाड़ियों ने सिर्फ़ हॉकी में ही उपलब्धियाँ हासिल नहीं की हैं, बल्कि अपने पुरुष समकक्षों को भी पीछे छोड़ रही हैं, जैसा कि 2016 ओलम्पिक और टोक्यो ओलम्पिक 2020 आयोजनों में देखा गया।

विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के स्तर पर भारतीय खेलों में योगदान पर्याप्त रहा है, लेकिन समय के साथ विकसित परिदृश्य में हालाँकि विश्वविद्यालय और कॉलेज स्तर के टूर्नामेंटों में गिरावट आई, मगर खेलो इंडिया जैसी प्रतियोगिताओं के आयोजन के सरकार के सराहनीय प्रयास ने युवाओं के बीच प्रतिस्पर्धी माहौल को बढ़ावा दिया है और उन्हें खेलों में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया है। युवाओं के बीच प्रतिस्पर्धा की सहज इच्छा को देखते हुए इस तरह की पहल उत्प्रेरक के रूप में काम करती है, एथलीटों को आगे आने और विभिन्न एथलेटिक प्रयासों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करती है।

भारत में खेलों के भविष्य पर विचार करते समय यह स्पष्ट हो जाता है कि सरकार देश के युवाओं के लिए सुलभ खेल के बुनियादी ढाँचे, व्यापक प्रशिक्षण सुविधाओं और आवश्यक संसाधनों को सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सरकार का यह प्रयास, एथलीटों को अपना कौशल और देश का गौरव बढ़ाने में सक्षम बनाता है। उल्लेखनीय है कि खेल आयोजनों से पहले और बाद में प्रधानमंत्री खुले तौर पर खिलाड़ियों की प्रशंसा और समर्थन करते हैं, उनका मनोबल बढ़ाते हैं और उन्हें राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी क्षमताओं के अनुसार सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इस तरह की पहल युवा पीढ़ी को खेल को करियर के रूप में अपनाने के लिए भी प्रेरित करती है। खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने और उनसे जुड़ने के प्रति प्रधानमंत्री की पहल का उनके प्रेरित और सफल होने के दृढ़ संकल्प पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

आज खेलों को व्यापक रूप से समझा जाता है, विभिन्न क्षेत्रों में कोचिंग और विकास पर बहुत ज़ोर दिया जाता है। राज्य सरकारों के प्रयासों ने हॉकी के प्रति जुनून को फिर से जगाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राउरकेला और भुवनेश्वर जैसे शहरों में हॉकी विश्व कप की मेज़बानी, खासकर राउरकेला जैसे छोटे शहरों में विश्व स्तरीय स्टेडियम की स्थापना को देखते हुए एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। भारत में वर्तमान खेल परिदृश्य जबरदस्त सम्भावनाओं को प्रदर्शित करता है, जिसमें उभरते खिलाड़ी हर दिन असाधारण योगदान दे रहे हैं।

हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप टिर्की को सुनें, QR कोड स्कैन करें

जगन्नाथ पुरी रथ यात्रा

आस्था और **उत्सव** की यात्रा

ओडिशा के पुरी में भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा बहुत ही ख़ास महत्त्व रखती है, जिसे हमारे देश के विभिन्न राज्यों में अत्यधिक भव्यता के साथ मनाया जाता है। इस शुभ त्योहार में लोग विभिन्न शहरों और अन्य देशों से शामिल होते हैं। यह समागम न केवल उनके अटूट विश्वास का उदाहरण है, बल्कि 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना को भी दर्शाता है।"

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ('मन की बात' के 102वें एपिसोड में)

20 जून, 2023 को शुरू हुई जगन्नाथ रथ यात्रा, जिसे रथ महोत्सव के रूप में भी जाना जाता है, एक पवित्र हिंदू त्योहार है, जिसे ओडिशा के पुरी में मनाया जाता है। इस भव्य त्योहार के दौरान भगवान विष्णु के अवतार भगवान जगन्नाथ, अपनी मौसी के घर गुंडिचा मंदिर की दिव्य यात्रा पर निकलते हैं। भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा के खूबसूरती से सजाए गए 3 रथों को हज़ारों भक्तों द्वारा पुरी की सड़कों से होते हुए नौ दिनों में लगभग तीन किलोमीटर की दूरी तय करते हुए ले जाया जाता है। विभिन्न पृष्ठभूमियों से लाखों भक्त इस भव्य रथ यात्रा को देखने और उसमें सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए पुरी में एकत्र होते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह पवित्र तीर्थयात्रा भक्तों की इच्छाओं को पूरा करती है और उनके पापों को नष्ट करती है। 28 जून, 2023 को यात्रा के अंतिम चरण के दौरान तीनों रथों को भगवान जगन्नाथ मंदिर में वापस लाया गया। इस यात्रा को 'बहुड़ा यात्रा' के नाम से भी जाना जाता है।

आपातकाल की गाथा

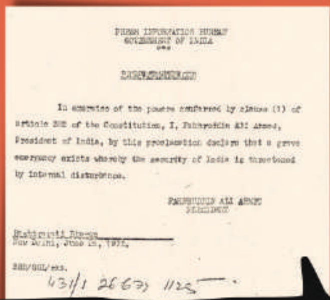

In exercise of the powers conferred by clause (1) of article 352 of the Constitution, I, Fakhruddin Ali Ahmed, President of India, by this proclamation declare that a grave emergency exists whereby the security of India is threatened by internal disturbance.

FAKHRUDDIN ALI AHMED
PRESIDENT

25 जून, 1975 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति फ़ख़रुद्दीन अली अहमद ने उस समय केंद्र में सरकार की सिफ़ारिश पर देश भर में आपातकाल की घोषणा की थी।

INDIAN HERALD

SPECIAL SUPPLEMENT

EMERGENCY DECLARED

JP, Morarji, Advani, Asoka Mehta & Vajpayee arrested

The Tribune

PRESIDENT DECLARES EMERGENCY

Fundamental rights suspended

आपातकाल के दौरान आर.के. लक्ष्मण का कार्टून

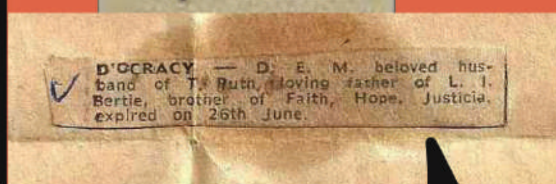

D'OCRACY — D. E. M. beloved husband of T. Ruth, loving father of L. I. Bertie, brother of Faith, Hope, Justicia, expired on 26th June.

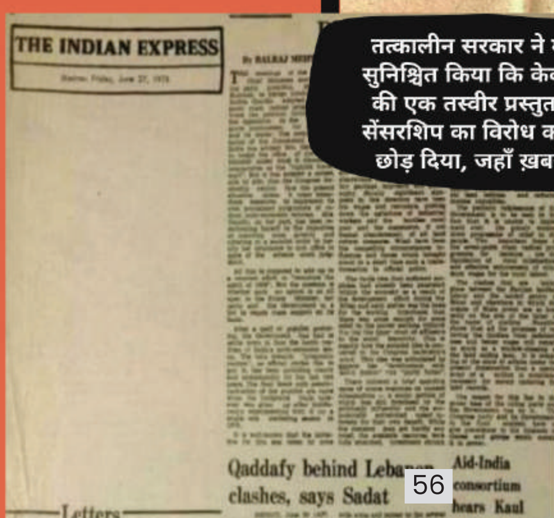

THE INDIAN EXPRESS

Qaddafy behind Lebanon clashes, says Sadat

Aid-India consortium hears Kaul

Letters

तत्कालीन सरकार ने मीडिया को सेंसर किया, यह सुनिश्चित किया कि केवल शांति, समृद्धि और प्रगति की एक तस्वीर प्रस्तुत की जाए। कुछ अख़बारों ने सेंसरशिप का विरोध करते हुए उन जगहों को खाली छोड़ दिया, जहाँ ख़बरों को सेंसर किया गया था।

"हम, अपने लोकतांत्रिक आदर्शों और अपने संविधान को सर्वोपरि मानते हैं, इसलिए हम 25 जून को भी कभी भुला नहीं सकते। यह वही दिन है, जब हमारे देश पर इमरजेंसी थोपी गई थी। यह भारत के इतिहास का काला दौर था। लाखों लोगों ने इमरजेंसी का पूरी ताकत से विरोध किया था।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(102वें 'मन की बात' में)

मोरारजी देसाई ने 24 मार्च, 1977 को भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली।

FREE PRESS JOURNAL

MORARJI SWORN IN PREMIER

Partial list of Cabinet today

Priorities of new Govt. outlined

THE TIMES OF INDIA

CONGRESS FACES DEFEAT

Indira out; Sanjay Gandhi trounced

JANATA SWEEPS POLL IN NORTHERN STATES

Ruling party holds its own in Andhra

Janata landslide in Bombay city

Janata establishes lead in Gujarat

21 मार्च, 1977 को आधिकारिक रूप से आपातकाल वापस ले लिया गया था। नए चुनाव हुए और लोगों के एक शानदार लोकतंत्र-समर्थक फैसले के बाद पहली बार केंद्र में एक गैर-कांग्रेसी सरकार सत्ता में आई।

आपातकाल में नागरिकों की स्वतंत्रता छीन ली गई। जॉर्ज फ़र्नांडीस जैसे नेताओं ने सरकार के ख़िलाफ़ व्यापक विरोध प्रदर्शन किए। कई विपक्षी नेताओं को गिरफ़्तार किया गया। सरकार का विरोध करने पर हज़ारों लोगों को हिरासत में भी लिया गया।

कुट्टी कहानी

'मन की बात' से प्रेरित स्टोरीटेलिंग का अनोखा उद्यम

कुट्टी कहानी, एक लोकप्रिय कहानी कहने की पहल है, जिसने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रसिद्ध रेडियो कार्यक्रम, 'मन की बात' से प्रेरणा ली है। अपने सकारात्मक सामाजिक संवर्द्धन के लिए जाने जाने वाले इस कार्यक्रम ने कुट्टी कहानी के निर्माण में उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया। सितम्बर, 2020 में प्रधानमंत्री ने कहा था, "कहानियों का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितना मानव सभ्यता। 'जहाँ आत्मा है, वहाँ कहानी है'। कहानियाँ मनुष्य के रचनात्मक और संवेदनशील पहलुओं को व्यक्त करती हैं और सामने लाती हैं। भारत में कहानी कहने या क़िस्सागोई की एक समृद्ध परम्परा रही है। हमें उस भूमि के निवासी होने पर गर्व है, जिसने हितोपदेश और पंचतंत्र की परम्परा को पोषित किया, जिसमें कहानियों में बुनी गई जानवरों, पक्षियों और परियों की एक काल्पनिक दुनिया के माध्यम से विवेक और ज्ञान के पाठ को आसानी से समझाया जा सकता है। हमारे यहाँ कथा की परम्परा है। यह धार्मिक कथा कहने का एक प्राचीन रूप है। 'कथकलाक्षेपम' इसका हिस्सा रहा है। यहाँ असंख्य लोक कथाएँ प्रचलित हैं।"

इसी से प्रेरित हो कर शास्त्रीय नृत्यांगना और पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित आनंदा शंकर जयंत ने कुट्टी कहानी के विचार की कल्पना की, जो एक वीडियो एम्बेडेड ईबुक है, जो सितम्बर 2020 की 'मन की बात' से कहानियों की शक्ति और कहानी कहने से सीखे जा सकने वाले मूल्यों से प्रेरित है। जिस तरह प्रधानमंत्री की 'मन की बात' पूरे भारत में लाखों लोगों से जुड़ती है, कुट्टी कहानी का उद्देश्य महत्त्वपूर्ण सन्देश देने वाली कहानियों के माध्यम से बच्चों को शामिल करना, शिक्षित करना और उनका मनोरंजन करना है। प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' के अपने नवीनतम एपिसोड में कुट्टी कहानी के उल्लेख ने इस पहल की दृश्यता को और बढ़ाया है, इसे विश्वसनीयता प्रदान की है और व्यापक दर्शकों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया है। प्रधानमंत्री ने भारतीय संस्कृति और विरासत को बढ़ावा देने की इस पहल की सराहना की।

"हाल ही में मुझे देश की प्रसिद्‌ध भारतीय शास्त्रीय नृत्यांगना आनंदा शंकर जयंत का एक पत्र मिला। उन्होंने 'मन की बात' के उस एपिसोड के बारे में लिखा है, जिसमें हमने स्टोरी टेलिंग के बारे में चर्चा की थी। उस कार्यक्रम में हमने इस फ़ील्ड से जुड़े लोगों की प्रतिभा को एकनॉलेज किया था। 'मन की बात' के उस कार्यक्रम से प्रेरित होकर आनंदा शंकर जयंत ने 'कुट्टी कहानी' तैयार की है। यह बच्चों के लिए अलग-अलग भाषाओं की कहानियों का एक बेहतरीन संग्रह है। यह प्रयास इसलिए भी बहुत अच्छा है, क्योंकि इससे हमारे बच्चों का अपनी संस्कृति से लगाव और गहरा होता है।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के 102वें एपिसोड में)

यह भविष्य को कैसे प्रेरित कर रहा है?

1 यह युवा मन को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की ओर आकर्षित करता है और आजीवन सीखने के लिए सतत प्रेरित करता है।

2 बच्चों की कल्पना की आकर्षक दुनिया के माध्यम से भारतीय संस्कृति और विरासत के प्रति प्रेम का बीजारोपण और प्रसार करता है

3 कहानी कहने के माध्यम से समाज में मूल्यों का निर्माण करता है, भारत की कालजयी प्राचीन कहानियों को प्रासंगिक और आधुनिक तरीके से सम्प्रेषित करता है

4 बच्चों के माध्यम से हमारे प्राचीन ज्ञान को अन्य बच्चों तक पहुँचाकर पश्चिमी कहानियों और भारतीय कहानियों के साथ बच्चों के बीच समन्वय बैठाना।

5 भारत के समृद्ध ज्ञान से सीखे गए मूल्यों और ज्ञान के माध्यम से युवा दिमागों का पोषण करता है और यह भारत की शाश्वत कहानियों और ज्ञान को दुनिया भर के बच्चों तक ले जाने की एक अग्रणी अवधारणा है

कुट्टी कहानी को अमेज़ॉन पर एक ईबुक के रूप में या नाट्यारम्भ नामक चैनल पर एक यूट्यूब श्रृंखला के रूप में देखा जा सकता है। ईबुक और यूट्यूब श्रृंखला में भारत की 55 सचित्र लघु कथाएँ हैं, जो छोटे बच्चों द्वारा बहुभाषी, विविध-कला, वीडियो एम्बेडेड प्रारूप में प्रस्तुत की गई हैं। ये भारत के स्थायी ज्ञान की कहानियाँ हैं, जिन्हें भारतीय कला के दृष्टिकोण से बताया गया है।

कुट्टी कहानी की कहानियाँ देखने के लिए QR कोड स्कैन करें

कुट्टी कहानी : युवा दर्शकों के लिए भारतीय लोककथाओं को पुनर्जीवित करने की पहल

आनंदा शंकर जयंत
संस्थापक, कुट्टी कहानी

कुट्टी कहानी एक ऐसी पहल है, जो मेरे दिल के बहुत करीब है। यह सब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम से मिली प्रेरणा से शुरू हुआ। प्रधानमंत्री ने सितम्बर, 2020 में जब अपने एक एपिसोड में कहानियों के महत्त्व और उनमें निहित मूल्यों पर ज़ोर दिया, तो मैं बहुत प्रभावित हुई। मुझे एहसास हुआ कि कहानियों में बच्चों को व्यस्त रखने, शिक्षित करने तथा उनका मनोरंजन करने की शक्ति है और मैं एक ऐसा मंच बनाना चाहती थी, जो इस शक्ति का उपयोग कर सके।

इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए मैंने कुट्टी कहानी शुरू की। मैंने अभिभावकों से सम्पर्क किया और उनसे कहा कि वे अपने बच्चों को उन कहानियों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें, जिनके बारे में उन्हें जानकारी है। हमने विशेष रूप से अपने इतिहास और अतीत से जुड़ी कहानियों पर ध्यान केंद्रित किया, क्योंकि बच्चे अक्सर इन पात्रों से गहराई से जुड़ते हैं। हमें जो प्रतिक्रिया मिली, वह ज़बरदस्त थी। भारत के सभी कोनों से, विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले और नृत्य, संगीत तथा आयुर्वेद जैसे विविध रूपों में कुशल बच्चों ने उत्सुकता से अपनी कहानियाँ लिखीं।

कहानी कहने के अनुभव को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए मैंने वीडियो में डिजिटल डिज़ाइन और एनीमेशन को शामिल करने का निर्णय लिया। एक छोटे प्रोजेक्ट के रूप में शुरू हुई यह पहल जल्द ही 55 एपिसोड के संग्रह में बदल गई। जब महामारी के कारण बाहर निकलना प्रतिबंधित था, तब ये एपिसोड प्राइम टाइम के दौरान डीडी भारती पर प्रसारित किए गए और ये व्यापक दर्शकों तक पहुँचे तथा उनका ध्यान आकर्षित किया।

मैं यहीं नहीं रुकना चाहती थी। मैं यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि बच्चे कुट्टी कहानी तक कई तरीकों से पहुँच सकें। इसलिए मैंने इन एपिसोड को एक ई-बुक में संकलित किया। इनके साथ, अतिरिक्त जानकारी प्रदान करने और सीखने के लिए प्रोत्साहित करने वाले- 'क्या आप जानते हैं' स्निपेट्स भी थे। प्रति कहानी लगभग पाँच मिनट की अवधि के भीतर सूचना, मनोरंजन, दृश्य और सीखने के इस संयोजन ने कुट्टी कहानी को युवा दर्शकों के लिए सुलभ और मनोरम बना दिया।

कुट्टी कहानी के लिए असली मोड़

तब आया, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में हमारी इस पहल का उल्लेख किया। इस मान्यता से मैं अविश्वसनीय रूप से सम्मानित हुई। यह कहानी कहने की कला के माध्यम से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और साझा करने के हमारे प्रयासों का सत्यापन था। मेरा दृढ़ विश्वास है कि कहानियाँ हमारी जड़ों से जुड़ने और हमारी विरासत को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम हैं।

कुट्टी कहानी तक पहुँचने की मेरी यात्रा चुनौतियों से रहित नहीं रही। 2008 में मुझे पता चला कि मुझे स्तन कैंसर है, इसने शुरुआत में मुझे हिलाकर रख दिया, लेकिन मैंने तय किया कि इसे खुद को परिभाषित नहीं करने दूँगी और मैंने शक्ति तथा प्रेरणा के स्रोत के रूप में अपनी कला और नृत्य की ओर रुख किया। इलाज के दौरान भी मैंने नृत्य करना और सिखाना जारी रखा। नृत्य की लय और धुन ने कैंसर के कारण मेरे जीवन में आए भय और अनिश्चितता को दूर करने में मदद की।

इसके अतिरिक्त मैंने अन्य कला रूपों को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी को अपनाया है। भरतनाट्यम ऐप, जिसे मैंने 2017 में विकसित और लॉन्च किया था, उसकी मदद से दुनिया भर में विद्यार्थी बुनियादी नृत्य दिनचर्या का अभ्यास कर सकते हैं। यह पारम्परिक कला और आधुनिक तकनीक का एक सुंदर सम्मिश्रण है, जो विद्यार्थियों को अपने गतिक्रम से अन्वेषण करने और सीखने में सक्षम बनाता है।

प्रशासन में करियर से लेकर एक प्रसिद्ध शास्त्रीय नर्तकी बनने और कहानी कहने की वकालत करने तक की मेरी यात्रा ने मुझे कला और मानवीय भावना की परिवर्तनकारी शक्ति का सबक दिया है।

कुट्टी कहानी और भरतनाट्यम ऐप जैसी पहल के माध्यम से मैं भारतीय संस्कृति, विरासत और कहानी कहने के महत्त्व को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हूँ। मेरा मानना है कि बच्चों को उनकी जड़ों से जोड़कर और उनकी प्रतिभा को निखारकर हम अपने देश और इसकी विविध कलात्मक परम्पराओं के लिए उज्ज्वल भविष्य बना सकते हैं।

आनंदा शंकर जयंत को सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Dr. S. Jaishankar @DrSJaishankar

An uplifting 102nd #MannKiBaat today carries many inspiring messages.

-PM @narendramodi spoke about the courage of people of Kutch, whose preparedness and resolve in face of Cyclone Biparjoy was unprecedented.

> **PMO India** @PMOIndia · Jun 18
> Be it the loftiest goal, be it the toughest challenge, the collective power of the people of India, provides a solution to every challenge. #MannKiBaat

12:24 PM · Jun 18, 2023 · 51.6K Views

Piyush Goyal @PiyushGoyal

बड़े से बड़ा लक्ष्य हो या कठिन से कठिन चुनौती, भारत के लोगों का सामूहिक बल, सामूहिक शक्ति, हर चुनोती का हल निकाल देता है।

#MannKiBaat
Translate Tweet

Himanta Biswa Sarma @himantabiswa

Be it the loftiest goal, be it the toughest challenge, the collective power of the people of India, provides a solution to every challenge - Hon PM Shri @narendramodi Ji

#MannKiBaat

11:30 AM · Jun 18, 2023 · 14.9K Views

G Kishan Reddy @kishanreddybjp

PM Shri @Narendramodi in today's #MannKiBaat, lauded the initiative of renowned classical dancer @anandasjayant, r/o Hyderabad, Telangana, who has compiled stories - 'Kutti Kahani', a great collection of stories from different languages for children, which can deepen the connection of children with our culture.

Narendra Modi and 2 others

Last edited 9:38 PM · Jun 18, 2023 · 7,148 Views

Ananda S Jayant @anandasjayant

Thankyou Sir Hon PM @narendramodi for mentioning our work and #KuttyKahani in todays #Mankibaat
You inspire us to do more for our Bharateeya sanskriti .
Thankyou Sir for your blessings 🙏
@PMOIndia
@kishanreddybjp
@nsitharaman
@MIB_India
@MinOfCultureGoI

> **Narendra Modi** @narendramodi · Jun 18
> Talked about a letter from Ananda Shankar Jayant Ji, who decided to work on popularising short stories in addition to her accomplished work in classical dance. #MannKiBaat

7:02 PM · Jun 18, 2023 · 103.1K Views

Jyotiraditya M. Scindia @JM_Scindia

छत्रपति शिवाजी महाराज का सैन्य, विशेषकर नौसेना प्रबंधन अद्वितीय और अनुकरणीय रहा है। आज भी आधुनिक समाज, उनके द्वारा स्थापित मानदण्डों से प्रेरणा प्राप्त कर रहा है।

#MannKiBaat
Translate Tweet

Dr Mansukh Mandaviya @mansukhmandviya

टीबी मुक्त भारत अभियान में बच्चों का योगदान भी प्रेरणीय है।

प्रधानमंत्री @NarendraModi जी ने भारत को टीबी रोग से मुक्त करने में बच्चों के इस योगदान को सराहा।

#MannKiBaat
Translate Tweet

12:07 PM · Jun 18, 2023 · 13.8K Views

Pakhi Das · 3rd+ + Follow
Wildlife conservation policy research and project developm...
3w · Edited

I was genuinely dreading this.

We cannot be causing widespread destruction of pristine hundreds of years old forests, diverting them for non forest purposes and then convert random pieces of land into 'mini forests'.

If you read the linked post from MoEFCC, PLEASE read this article too: https://lnkd.in/dtgcEHiq

With all due respect to all the leaders and decision makers of the country, maybe this would be a good time to seek ideas and solutions from thematic experts on topics. We can't possibly #MissionLife through the future.

> **MoEF&CC** + Follow
> 14,177 followers
> 1mo
>
> Prime Minister Shri @NarendraModi talked about a teacher named Raafi Ramnath from #Kerala who turned a barren land into a mini forest using the #Miyawaki technique during #MannkiBaat program.
>
> Now, let's understand what exactly is the Miyawaki technique.

Smriti Z Irani @smritiirani

PM @narendramodi जी ने आज #MannKiBaat में देशवासियों के सामूहिक प्रयासों, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस और पर्यावरण व जल संरक्षण हेतु किए जा रहे प्रेरणादायी प्रयासों की चर्चा की।

'मन की बात' कार्यक्रम देशहित में अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने की प्रेरणा देता है।
Translate Tweet

youtube.com
PM Modi's Mann Ki Baat with the Nation, June 2023
#MannKiBaat #MKBJune2023 #PMModiMannKiBaat
#MKB During Mann Ki Baat, PM Modi praised the resilienc...

2:53 PM · Jun 18, 2023 · 137.4K Views

Office of LG J&K @OfficeOfLGJandK

Heartfelt gratitude to Hon'ble PM Shri Narendra Modi Ji. Congratulations @DrSyedSehrish, team @DCBaramulla. It's a shining example of our commitment to create a peaceful, prosperous, self-reliant, and self-confident J&K UT.

> **PMO India** @PMOIndia · Jun 18
> Jammu and Kashmir's Baramulla is turning into symbol of a new white revolution. #MannKiBaat

12:32 PM · Jun 18, 2023 · 24.2K Views

Dharmendra Pradhan @dpradhanbjp

प्रधानमंत्री @narendramodi जी की महाप्रभु जगन्नाथ पर गहरी आस्था है।

गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुए भी मोदी जी ने हर वर्ष रथ यात्रा में बढ़ चढ़ कर सेवा किया है। आज #MannKiBaat कार्यक्रम में ओडिया आस्था और अस्मिता के केंद्र महाप्रभु जगन्नाथ की पावन रथ यात्रा का महत्व फिर एक बार देश के समक्ष रखने के लिए प्रधानमंत्री जी का आभार। निश्चित ही रथ यात्रा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का प्रतिबिंब है। भक्ति, श्रद्धा और सौभाग्य के पर्व महाप्रभु जगन्नाथ के रथ यात्रा की सभी को शुभकामनाएं।
Translate Tweet

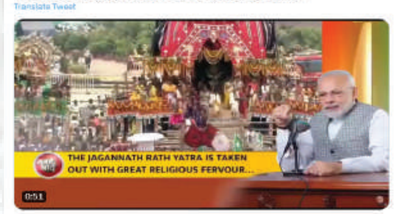

3:10 PM · Jun 18, 2023 · 6,269 Views

Pradeep Treepathi
21 June at 18:03

Our honorable PM Shri Narendra Modi Ji acknowledges #MiyawakiPlantation

It was really a great joy to listen recent episode of #MannKiBaat, as our Honorable PM Shri Narendra Modi Ji acknowledges Miyawaki Plantation. This is a proud moment for us for being India's largest quality #MiyawakiForest creator NGO.

Our Focus area is Mega cities and Urban India which are most effected by air pollution, heatwave and heat island effect... See more

Ananda Shankar Jayant
18 June at 10:14

This I can't believe!
Hon PM tweets about our work #KuttyKanani and his mention of it in today's #Mankibaat
Thankyou Sir Narendra Modi Ji 🙏🙏
https://twitter.com/narendr.../status/16703979553991 27042...

← Tweet

Narendra Modi
@narendramodi

Talked about a letter from Ananda Shankar Jayant Ji, who decided to work on popularising short stories in addition to her accomplished work in classical dance. #MannKiBaat

Syed Sehrish Asgar
@DrSyedSehrish

Thank you sir for acknowledging the efforts of Team J&K and Team Baramulla!
We will definitely work hard to keep this momentum going!
@OfficeOfLGJandK
@manojsinha_
@NITIAayog

PMO India @PMOIndia · Jun 18
Jammu and Kashmir's Baramulla is turning into symbol of a new white revolution. #MannKiBaat

12:10 PM · Jun 18, 2023 · 14.7K Views

TB Mukt Bharat - Himachal
@mukt_tb

📢 Big applause to Mr. Gyan Singh Gram Pradhan from Kinnaur, Himachal recognized and appreciated by our Hon'ble Prime Minister during today's Mann ki Baat episode as a shining example of a Nikshay Mitra! ⭐ Your tireless efforts in the fight against TB are remarkable.
#TBMuktBharat

Central TB Division | #TBMuktBharat and 9 others

11:51 AM · Jun 18, 2023 · 210 Views

Animal Husbandry Department Kashmir
18 Jun 2023

Hon'ble Prime Minister of India Shri. Narendra Modi in PMs MANN KI BAAT applauding people of District Baramulla J&K for achieving self sufficiency in milk production.It is indeed a moment of pride as this district, which previously faced a deficit in milk production, has successfully established 500 new Dairy Farms within the span of 2.5 to 3 years, resulting in an impressive daily production of 5.5 lac liters of milk per day.This has been made possible by implementation of beneficiary oriented scheme IDDS (INTEGRATED DAIRY DEVELOPMENT SCHEME) by the Department of Animal Husbandry Kashmir.

आपातकाल : यातनाओं की याद से सिहर जाता है मन

नई दिल्ली (भाषा)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आपातकाल को भारतीय इतिहास का 'काला दौर' करार देते हुए रविवार को कहा कि उस दौरान लोकतंत्र के समर्थकों पर जो अत्याचार किए गए और उन्हें जिस प्रकार की यातनाएं दी गईं, उसे याद करने भर से आज भी मन सिहर उठता है।

■ 25 जून की तारीख को कभी भुलाया नहीं जा सकता
■ भारत 'लोकतंत्र की जननी' है, जो लोकतांत्रिक आदर्शों को सर्वोपरि मानता है
मन की बात में बोले मोदी

आकाशवाणी के मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 102वीं कड़ी में अपने विचार साझा करते हुए मोदी ने कहा कि भारत 'लोकतंत्र की जननी' है, जो लोकतांत्रिक आदर्शों और संविधान को सर्वोपरि मानता है, लिहाजा 25 जून की तारीख को कभी भुलाया नहीं जा सकता। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा भारत में 1975 में आपातकाल लाया गया था। मोदी ने कहा, यह भारत के इतिहास का काला दौर था। लाखों लोगों ने आपातकाल का पूरी ताकत से विरोध किया था। लोकतंत्र के समर्थकों पर उस दौरान इतना अत्याचार किया गया, इतनी यातनाएं दी गईं कि आज भी मन सिहर उठता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश जब आजादी के 75 वर्ष से सौवें वर्ष की तरफ बढ़ रहा है, तो आजादी को खतरे में डालने वाले आपातकाल के अपराधों का अवलोकन जरूरी है। उन्होंने कहा कि इससे आज की युवा पीढ़ी को लोकतंत्र के मायने तथा उसकी अहमियत समझने में और ज्यादा आसानी होगी।

मोदी ने 21 जून को मनाए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का भी उल्लेख किया और देशवासियों से योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने का अनुरोध किया। 'योग को अपने जीवन में जरूर अपनाएं, इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। अगर अब भी आप योग से नहीं जुड़े हैं, तो 21 जून इस संकल्प के लिए बहुत बेहतरीन मौका है।

PM ने कहा, इमरजेंसी इतिहास का काला दौर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को इमरजेंसी को भारतीय इतिहास का काला दौर बताया। उन्होंने कहा कि उस दौरान लोकतंत्र के समर्थकों पर जो अत्याचार किए गए, उसे याद करने भर से आज भी मन सिहर उठता है। 'मन की बात' में मोदी ने लोगों से कहा कि योग को अपने जीवन में जरूर अपनाएं। अगर अब भी योग से नहीं जुड़े हैं तो 21 जून इस संकल्प के लिए बेहतरीन मौका है। (पीटीआई)

PM Modi lauds athlete Murali Sreeshankar in Mann ki Baat

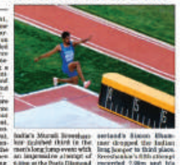

देश २०२५ पर्यंत क्षयरोगमुक्त करणार

'मन की बात' कार्यक्रमात पंतप्रधान मोदींनी व्यक्त केला निर्धार

आणीबाणीच्या कालखंडावर भाष्य

MANN KI BAAT

PM: Emergency a dark period in India's history, democracy supporters tortured

അടിയന്തരാവസ്ഥ ഇന്ത്യയുടെ ഇരുണ്ടയുഗമെന്ന് മോദി

ਐਮਰਜੈਂਸੀ ਇਤਿਹਾਸ ਦਾ ਕਾਲਾ ਦਿਨ

ਜਾਗਰਣ ਬਿਊਰੋ, ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ : ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨਰਿੰਦਰ ਮੋਦੀ ਨੇ ਇਕ ਵਾਰ ਮੁੜ ਐਮਰਜੈਂਸੀ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਕਰਦਿਆਂ ਬਿਨਾਂ ਨਾਂ ਲਏ ਕਾਂਗਰਸ 'ਤੇ ਨਿਸ਼ਾਨਾ ਲਾਇਆ ਤੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਐਮਰਜੈਂਸੀ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਦਾ ਕਾਲਾ ਦੌਰ ਸੀ, ਉਸ ਨੂੰ ਭੁਲਾਇਆ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਉਸ ਦੌਰਾਨ ਲੋਕਤੰਤਰ ਸਮਰਥਕਾਂ 'ਤੇ ਭਾਰੀ ਅੱਤਿਆਚਾਰ ਕੀਤੇ ਗਏ। ਉਨ੍ਹਾਂ 'ਤੇ ਏਨਾ ਤਸ਼ੱਦਦ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਕਿ ਅੱਜ ਵੀ ਮਨ ਕੰਬ ਉੱਠਦਾ ਹੈ। ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ ਨੂੰ ਵੀ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਨੂੰ ਖ਼ਤਰੇ 'ਚ ਪਾਉਣ ਵਾਲਿਆਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਅਪਰਾਧੀਆਂ ਬਾਰੇ ਜਾਣਨ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਲੋਕਤੰਤਰ ਦੇ ਅਰਥ ਤੇ ਉਸ ਦੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਸਮਝਣ 'ਚ ਜ਼ਿਆਦਾ ਆਸਾਨੀ ਹੋਵੇਗੀ। ਪੀਐੱਮ ਮੋਦੀ ਸ਼ਨਿਚਰਵਾਰ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਹਰਮਨ ਪਿਆਰੇ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ 'ਚ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਗੱਲ ਕਰ ਰਹੇ ਸਨ। ਉਂਝ ਤਾਂ ਇਹ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਹਰ ਮਹੀਨੇ ਦੇ ਅਖੀਰਲੇ ਐਤਵਾਰ ਨੂੰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਪਰ ਇਸ ਵਾਰ ਆਖ਼ਰੀ ਐਤਵਾਰ ਨੂੰ ਪੀਐੱਮ ਦੇ ਅਮਰੀਕਾ 'ਚ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਇਸ ਨੂੰ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਕਰਵਾ ਲਿਆ ਗਿਆ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਪੀਐੱਮ ਨੇ 25 ਜੂਨ 1975 ਨੂੰ ਯਾਦ ਕੀਤਾ ਤੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਸ ਦਿਨ ਦੇਸ਼ 'ਤੇ ਐਮਰਜੈਂਸੀ ਥੋਪੀ ਗਈ ਸੀ। ਭਾਰਤ ਲੋਕਤੰਤਰ ਦੀ ਮਾਂ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਜਮਹੂਰੀ ਆਦਰਸ਼ਾਂ ਨੂੰ ਸਭ ਤੋਂ ਉਪਰ ਮੰਨਦੇ ਹਾਂ ਪਰ ਉਸ ਦੌਰ ਨੂੰ ਕਦੇ ਵੀ ਭੁਲਾਇਆ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਮੋਦੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਐਮਰਜੈਂਸੀ ਦੌਰਾਨ ਲੋਕਤੰਤਰ ਸਮਰਥਕਾਂ 'ਤੇ ਹੋਏ ਤਸ਼ੱਦਦ ਬਾਰੇ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਲਿਖੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਮੈਨੂੰ ਵੀ 'ਸੰਘਰਸ਼ 'ਚ ਗੁਜਰਾਤ' ਪੁਸਤਕ ਲਿਖਣ ਦਾ ਮੌਕਾ ਮਿਲਿਆ ਸੀ। ਇਸ 'ਚ ਅਸੀਂ ਦੱਸਿਆ ਸੀ ਕਿ ਲੋਕਤੰਤਰ ਦੇ ਰਖਵਾਲਿਆਂ ਨਾਲ ਉਸ ਵੇਲੇ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਮਾੜਾ ਵਿਹਾਰ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਮੈਂ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਜਦੋਂ ਆਪਣੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਮਹਾਉਤਸਵ ਮਨਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਤਾਂ ਅਜਿਹੇ ਵੇਲੇ ਲੋਕ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਨੂੰ ਖ਼ਤਰੇ 'ਚ ਪਾਉਣ ਵਾਲੇ ਅਜਿਹੇ ਅਪਰਾਧੀਆਂ ਵੱਲ ਵੀ ਜ਼ਰੂਰ ਧਿਆਨ ਦੇਣ। ਪੀਐੱਮ ਨੇ ਕਾਂਗਰਸ 'ਤੇ ਇਹ ਨਿਸ਼ਾਨਾ ਅਜਿਹੇ ਵੇਲੇ ਲਾਇਆ ਹੈ ਜਦੋਂ ਕਾਂਗਰਸ ਦੇ ਸਾਬਕਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਰਾਹੁਲ ਗਾਂਧੀ ਅਮਰੀਕਾ ਦੀ ਯਾਤਰਾ ਦੌਰਾਨ ਦੇਸ਼ 'ਚ ਲੋਕਤੰਤਰ ਖ਼ਤਰੇ 'ਚ ਹੋਣ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ।

Milk surplus Baramulla now, becoming face of White Revolution: PM

Praises young entrepreneurs for establishing sustainable dairy units

'Real strength of our youth': PM lauds India's sports feats

In Mann Ki Baat, Lists Wins In Hockey, Shooting, Athletics

असीम-अनंत से जुड़ना है योग

'मन की बात' की 102वीं कड़ी में कहा, योग को जीवन का हिस्सा बनाएं

UN मुख्यालय में योग प्रोग्राम के लिए दुनिया भर में जोशः मोदी

■ पीटीआई, नई दिल्ली

खिलाड़ियों के प्रदर्शन का भी जिक्र किया

प्रधानमंत्री ने खेल स्पर्धाओं में हाल ही में भारतीय खिलाड़ियों के प्रदर्शन का भी जिक्र किया कहा कि इसी महीने भारत की टीम ने पहली बार महिला जूनियर एशिया कप हॉकी जीतकर तिरंगे की शान बढ़ाई है। मोदी ने 20 जून को देश भर के विभिन्न स्थानों पर निकाली जाने वाली रथयात्राओं का जिक्र किया।

'कच्छ के लोग तूफान की तबाही से उबरेंगे'

मियावाकी तकनीक अपनाने की अपील

దేశ చరిత్రలో చీకటికాలం.. ఎమర్జెన్సీ

'మన్ కీ బాత్'లో ప్రధాని మోదీ వ్యాఖ్య

www.eenadu.net

THIS WORD MEANS

MIYAWAKI FORESTS

PM Modi spoke of Miyawaki forests in Sunday's Mann ki Baat. Space-starved Mumbai has many such forests

PRATIP ACHARYA
MUMBAI, JUNE 18

PRIME MINISTER Narendra Modi in his 'Mann ki Baat' episode Sunday spoke about the Miyawaki technique, the Japanese method of creating dense urban forests in small areas. The PM also cited the example of a Kerala-based teacher, Raafi Ramnath, who used the Miyawaki technique to transform a barren land into a mini forest called Vidyavanam by planting 115 varieties of trees.

In Mumbai too, the Brihanmumbai Municipal Corporation (BMC) has been creating Miyawaki forests to increase the green cover of the space-starved financial capital.

A Miyawaki garden in Chandivali, Mumbai. Express

What is the Miyawaki method?

Named after Japanese botanist Akira Miyawaki, this method involves planting two to four different types of indigenous trees within every square metre of the plot. Because the plants are so close together, they shoot up quickly, competing for sunlight. Thus, they grow to their full length within three years.

The Miyawaki method uses indigenous plants, so they are mostly self-sustaining and don't require regular maintenance like manuring and watering. The methodology was developed in the 1970s, with the basic objective of densifying green cover on a small parcel of land.

How is the Miyawaki method useful?

The dense green cover of indigenous trees plays a key role in absorbing dust particles. The plants also help in regulating surface temperature. Some of the common indigenous plants that are used for these forests include Anjan, Amala, Bel, Arjun and Gunj.

At the industrial neighbourhood in Marol (Andheri East), the BMC is creating an urban forest with the Miyawaki method. "These green patches play a major role in regulating the carbon levels of a given area, which may help in maintaining a clean year climate-wise. Also, these forests encourage new biodiversity and an ecosystem is developed around them, which increases the fertility of the soil and regulates surface temperature," said Jeetendra Pardeshi, superintendent of BMC's garden cell, which is implementing this project.

Which other areas have such forests?

According to the civic body's data, 64 Miyawaki forests have been planted in Mumbai so far. The Miyawaki drive was launched under the BMC's urban forest project on January 2, 2020 and the first such forest was created in Bhakti Park, Chembur, in the eastern suburbs.

The largest Miyawaki forest under this project was created at Chandivali's Nahar Amrut Shakti Udyan, where over 41,000 trees were planted over 13 acres.

Civic officials said that more than 4,00,000 trees have been planted in these 64 forests so far. The BMC's Garden cell had earmarked 1,100 plots for setting up these forests back in 2020. In the next one year, the BMC aims to create 14 more urban forests by planting 80,400 trees of various indigenous species.

ਅਮਰੀਕਾ ਦੌਰੇ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ 'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ'

ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ : ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨਰਿੰਦਰ ਮੋਦੀ ਨੇ ਐਤਵਾਰ ਕਿਹਾ ਕਿ ਐਮਰਜੈਂਸੀ ਭਾਰਤ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ 'ਦਾ 'ਕਾਲਾ ਦੌਰ' ਸੀ, ਜਦੋਂ ਜਮਹੂਰੀਅਤ ਦੇ ਹਮਾਇਤੀਆਂ 'ਤੇ ਜ਼ੁਲਮ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਤਸੀਹੇ ਦਿੱਤੇ ਗਏ। ਆਪਣੇ ਮਾਸਿਕ ਰੇਡੀਓ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ 'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' ਦੀ 102ਵੀਂ ਕੜੀ ਦੌਰਾਨ ਵਿਚਾਰ ਸਾਂਝੇ ਕਰਦਿਆਂ ਮੋਦੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਭਾਰਤ 'ਜਮਹੂਰੀਅਤ ਦੀ ਜਨਨੀ' ਹੈ, ਜੋ ਜਮਹੂਰੀ ਆਦਰਸ਼ਾਂ ਤੇ ਸੰਵਿਧਾਨ ਨੂੰ ਸਭ ਤੋਂ ਉੱਤੇ ਰੱਖਦਾ ਹੈ, ਲਿਹਾਜ਼ਾ 25 ਜੂਨ ਦੀ ਤਰੀਕ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਭੁਲਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਤੱਤਕਾਲੀ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਇੰਦਰਾ ਗਾਂਧੀ ਨੇ 1975 'ਚ ਪੂਰੇ ਦੇਸ਼ 'ਚ ਐਮਰਜੈਂਸੀ ਲਾਗੂ ਕੀਤੀ ਸੀ। ਮੋਦੀ ਨੇ 21 ਜੂਨ ਨੂੰ ਮਨਾਏ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਕੌਮਾਂਤਰੀ ਯੋਗ ਦਿਹਾੜੇ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਕਰਦਿਆਂ ਦੇਸ਼ਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਅਪੀਲ ਕੀਤੀ ਕਿ ਉਹ ਯੋਗ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਨਿੱਤ ਦੀ ਰੂਟੀਨ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਬਣਾਉਣ। ਚੱਕਰਵਾਤੀ ਤੂਫ਼ਾਨ ਬਿਪਰਜੁਆਏ ਨਾਲ ਗੁਜਰਾਤ ਦੇ ਕੱਛ ਜ਼ਿਲ੍ਹੇ 'ਚ ਤਬਾਹੀ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਦਿਆਂ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਥੋਂ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਜਿਸ ਮਜ਼ਬੂਤੀ ਨਾਲ ਇਸ ਦਾ ਮੁਕਾਬਲਾ ਕੀਤਾ; ਉਹ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਆਸ ਜਤਾਈ ਕਿ ਕੱਛ ਦੇ ਲੋਕ ਜਲਦੀ ਹੀ ਇਸ ਤਬਾਹੀ ਤੋਂ ਉੱਭਰ ਜਾਣਗੇ।

ਮੋਦੀ 21 ਤੋਂ 24 ਜੂਨ ਤੱਕ ਅਮਰੀਕਾ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਦੌਰੇ 'ਤੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ, ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਐਤਕੀਂ 'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਨੂੰ ਇਕ ਹਫ਼ਤੇ ਪਹਿਲਾਂ ਪ੍ਰਸਾਰਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ।

Maan Ki Baat: PM hails people of Kutch region for showing resilience against Cyclone Biparjoy

Our Bureau
New Delhi

Prime Minister Narendra Modi, in his monthly radio programme *Maan Ki Baat* on Sunday, hailed people of Kutch for facing Cyclone Biparjoy with collective strength, courage and preparedness, though the storm damaged infrastructure substantially.

"People from Kutch will celebrate their new year 'Ashadhi Beej' in the next two days. It's also a coincidence that Ashadhi Beej is considered as the beginning of monsoon," he stated.

The Prime Minister said he has been visiting Kutch for years and has had the opportunity (as Gujarat CM) to serve the people there. He stated he knows about the courage of people of Kutch, their will-power and their lifestyle.

People will overcome the devastation unleashed by the cyclone, Modi expressed confidence as they did after the massive earthquake that struck the place two decades ago. Kutch is one of the fastest growing districts of the nation, the Prime Minister added.

He told listeners that he decided to hold the 102nd episode of *Maan Ki Baat* ahead of schedule since he would be busy in America. "So I thought what could be better than the blessings of the people to give me energy," he stated.

MIYAWAKI METHOD

India is fast embracing the Miyawaki method of making land green and fertile, Modi stated, underscoring the country's commitment to sustainable growth.

The PM gave the latest example of a teacher, Rafi Ramnath who, he stated, has changed the entire landscape

Prime Minister Narendra Modi

of an area in Kerala through this technique.

Ramnath has created a herbal garden, which has now become a biodiversity zone called "Vidyavanam", where he has planted 115 varieties of 450 plants with the help of his students, said the PM. Vidyavanam now has become a major attraction with many people visiting it, Modi informed listeners.

This method of growing jungles even in cities has become popular in Gujarat, Maharashtra and Uttar Pradesh, Modi said.

ERADICATING TB

He also stated that India has set a target of eradicating tuberculosis by 2025 with the aide of Ni-kshay Mitra. As per Pradhan Mantri TB Mukt Bharat Abhiyaan (Ni-kshay Mitra Initiative) implemented by the Ministry of Health and Family Welfare, 9.55 lakh out of the 9.69 lakh consented TB patients across the country have been adopted till March 9 this year.

According to the PM, Lord Jagannath's rath yatra in Odisha's Puri is a wonder in itself, since it showcases the true spirit of "Ek Bharat-Shreshtha Bharat". "My dear countrymen, the historical Rath Yatra on June 20 bears a unique identity throughout the world" and is celebrated with fanfare through the country, Modi said.

ऊना की सात साल की बेटी और किन्नौर के ज्ञान की मोदी ने की तारीफ

शिमला। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में टीबी उन्मूलन की दिशा में ऊना की सात वर्षीय बेटी नलिनी व किन्नौर के पंचायत प्रधान ज्ञान सिंह के प्रयासों को सराहा। पीएम ने इसे हिमाचल के लिए गर्व का अवसर बताते हुए इससे अन्य लोगों को प्रेरणा मिलने की बात कही है। मोदी ने भारत को टीबी मुक्त बनाने की बात पर विशेष बल दिया। इस दौरान उन्होंने देशवासियों के साथ टीबी के खिलाफ मुहिम में लगे लोगों की सराहना की। ब्यूरो

मन की बात में टीबी उन्मूलन को लेकर पीठ थपथपाई

बिपरजॉयने उद्ध्वस्त केले, पण लोकांनी दाखवले अभूतपूर्व धैर्य

'मन की बात'मध्ये मोदींनी केले कौतुक

अमेरिका दौऱ्यामुळे अगोदरच कार्यक्रम प्रसारित

कच्छीओना खमीरना वखाण करता वडा प्रधान

દેશને ૨૦૨૫ સુધીમાં ક્ષયમુક્ત કરાશેઃ મોદી

(જુઓ પાનું ૨)

भारत का आपदा प्रबंधन मिसाल बन रहाःमोदी

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि चक्रवात बिपारजॉय से गुजरात के कच्छ समेत कुछ अन्य हिस्सों में नुकसान हुआ है, लेकिन सबसे अहम बात यह है कि इससे कोई जनहानि नहीं हुई। यह भारत की आपदा प्रबंधन की मिसाल है, जो पिछले कुछ वर्षों में विकसित हुई है। उन्होंने भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की पहचान बताया। साथ ही मोदी ने कहा, 2025 तक देश टीबी मुक्त हो जाएगा।

गुजरात में बिपारजॉय से प्रभावित तटीय इलाके के लोग जल्द उबर जाएंगे। अहम बात यह है कि चक्रवात से कोई जानी नुकसान नहीं हुआ है।
–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

नदियों और नहरों को पुनर्जीवित करना होगा

मोदी ने देश के लोगों से नदियों, नहरों और तालाबों को पुनर्जीवित करने का आह्वान किया। उन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज का उदाहरण देते हुए कहा कि वीरता के साथ ही उनके शासन और प्रबंध कौशल से भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

प्रधानमंत्री ने रविवार को 'मन की बात' की 102वीं कड़ी में ये विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि भारत 'लोकतंत्र की जननी' है, जो लोकतांत्रिक आदर्शों और संविधान को सर्वोपरि मानता है। वर्ष 1975 में देश पर थोपे गए आपातकाल को कभी भुलाया नहीं जा सकता। लाखों लोगों ने आपातकाल का पूरी ताकत से विरोध किया था। आपातकाल को भारतीय इतिहास का 'काला दौर' करार दिया। उस दौर में संवैधानिक व मानवीय मूल्यों पर जो आघात हुआ, उसका अवलोकन जरूरी है। इससे आज की युवा पीढ़ी को लोकतंत्र के मायने और इसकी अहमियत सीखने व समझने में आसानी होगी।

योग दिनचर्या में हो : प्रधानमंत्री ने 21 जून को मनाए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का उल्लेख करते हुए कहा कि हर व्यक्ति को योग अपनी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए। सेहतमंद रहने के लिए योग अहम है। उन्होंने कहा, इस बार उन्हें न्यूयॉर्क स्थित संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में होने वाले योग दिवस कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिलेगा।

टीबी मरीजों की मदद के लिए तोड़ दी थी गुल्लक

'मन की बात' में प्रधानमंत्री मोदी ने की ऊना की सात वर्षीय नलिनी की तारीफ

स्टाफ रिपोर्टर – शिमला

- टीबी उन्मूलन के लिए हिमाचल के प्रयासों की दी मिसाल
- किन्नौर जिला के ग्राम पंचायत प्रधान ज्ञान सिंह का भी जिक्र
- अनुराग बोले, इन दोनों की कहानी लोगों को देगी प्रेरणा

'मन की बात' में : पृष्ठ छह पर

یوگا کو روزمرہ کے معمولات کا حصہ بنائیں: مودی

प्रधानमंत्री ने भारत के प्रदर्शन की सराहना की

'मन की बात' में कहा, इस माह खेल जगत से बड़ी खबरें आईं

नई दिल्ली, 18 जून (भाषा)।

रेडियो प्रसारण

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय खिलाड़ियों की उपलब्धियों की तारीफ करते हुए रविवार को कहा कि पहले अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अक्सर भारत का कोई जिक्र नहीं होता था, लेकिन अब चीजें बदल गई हैं और यहां तक कि पिछले कुछ सप्ताह की सफलता की सूची भी काफी लंबी है। अपने मासिक 'मन की बात' रेडियो प्रसारण में मोदी ने कहा कि इस महीने खेल जगत से भारत के लिए कई बड़ी खबरें आई हैं।

मोदी ने खेल स्पर्धाओं में हाल ही में भारतीय खिलाड़ियों के प्रदर्शन का भी जिक्र करते हुए कहा कि इसी महीने भारत की टीम ने पहली बार महिला जूनियर एशिया कप हाकी जीतकर तिरंगे की शान बढ़ाई है। उन्होंने कहा, 'इसी महीने खेल जगत से भारत के लिए कई बड़ी खुशखबरी आई हैं। भारत की टीम ने पहली बार महिला जूनियर एशिया कप जीतकर तिरंगे की शान बढ़ाई है। इसी महीने हमारी पुरुष हॉकी टीम ने भी जूनियर हॉकी एशिया कप जीता है। इसके साथ ही, हम इस टूर्नामेंट के इतिहास में सबसे अधिक जीत दर्ज करने वाली टीम भी बन गए हैं।'

उन्होंने जूनियर निशानेबाजी विश्व कप में भारतीय टीम के शीर्ष स्थान पर रहने की तारीफ करते हुए कहा, 'जूनियर निशानेबाजी विश्व कप में भी हमारे जूनियर ने भी कमाल कर दिया। भारतीय टीम ने इस टूर्नामेंट में पहला स्थान हासिल किया है। इस टूर्नामेंट में कुल जितने स्वर्ण पदक थे, उनमें से 20 फीसद अकेले भारत के खाते में आए हैं।'

नरेंद्र मोदी ने कहा, 'जून में एशियाई अंडर-20 एथलेटिक्स चैंपियनशिप भी हुई। इसमें, भारत पदक तालिका में 45 देशों में शीर्ष तीन में रहा।' उन्होंने आगे कहा, एक समय होता था जब हमें अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के बारे में पता तो चलता था, लेकिन उनमें अक्सर भारत का कहीं कोई नाम नहीं होता था। लेकिन, आज मैं केवल पिछले कुछ सप्ताह की सफलताओं का जिक्र कर रहा हूं, तो भी सूची इतनी लंबी हो जाती है। यही हमारे युवाओं की असली ताकत है।'

Life's emotions are associated with rivers: PM

YOU READ IT HERE

40 years on, UP's lost river Neem springs back to life

کھلاڑی ملک کا نام روشن کر رہے ہیں: مودی

लोगों के प्रयास से नीम नदी हुई पुनर्जीवित

Lives saved, PM hails cyclone rescue effort

HT Correspondent

letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: People of Kutch will rapidly emerge from the devastation caused by Cyclone Biparjoy, Prime Minister Narendra Modi said on Sunday, as he praised the strength of disaster management that India has developed.

In his 102nd monthly 'Mann Ki Baat' radio broadcast, the prime minister described the Emergency as a "dark period" in India's history and said the country can never forget June 25, the date on which the Emergency was imposed in 1975.

Modi said India is the mother of democracy and "we consider our democratic ideals as paramount and our Constitution supreme". "Therefore, we can never forget June 25th. This is the very day when Emergency was imposed on our country. It was a dark period in the history of India," he said.

Emergency was imposed in 1975 by the Congress government led by prime minister Indira Gandhi.

"Lakhs of people opposed the emergency with full might. The supporters of democracy were tortured so much during that time, that even today thinking about it, makes us shudder," Modi said.

→P8

CYCLONE BIPARJOY

Modi hails disaster management; ships and aircraft deployed to assess damage

---

વડાપ્રધાને મન કી બાતના ૧૦૨માં એપિસોડને સંબોધિત કર્યું

મોદીએ બિપોરજોય વાવાઝોડાને લડત આપનાર કચ્છવાસીઓની પ્રસંશા કરી

પ્રધાનમંત્રી મોદીએ કહ્યું કે જ્યારે હું ભારતના સામાન્ય માણસના પ્રયત્નો, પરિશ્રમ અને ઈચ્છાશક્તિ જોઉં છું ત્યારે હું પોતે અભિભૂત થઈ જાઉં છું

भारत का आपदा प्रबंधन मिसाल बना : मोदी

मियावाकी तकनीक से करें वनीकरण

ఎమర్జెన్సీ.. ఓ చీకటి అధ్యాయం

జూన్ 25ను ఎప్పటికీ మర్చిపోలేం

» మన్ కీ బాత్'లో ప్రధాని మోదీ

റാഫി രാമനാഥൻ, പരിസ്ഥിതി സംരക്ഷണം ദൗത്യമാക്കിയ അധ്യാപകൻ

من کی بات پروگرام

لوگ ندیوں،نہروں،جھیلوں کو زندہ کرنے میں مصروف

ایمرجنسی کو جان کر نوجوان نسل جمہوریت کا مطلب سمجھے گی

لوگ یوگا کو روزمرہ کے معمولات کا حصہ بنائیں / وزیراعظم مودی

મન કી બાતમાં મોદીએ કહ્યું- 21 જૂન યોગ સાથે જોડાવાનો દિવસ

ભાસ્કર ન્યૂઝ - નવી દિલ્હી

પીએમ મોદીએ રવિવારે રેડિયો કાર્યક્રમ મન કી બાતની 102મા એપિસોડમાં દેશની જનતાને સંબોધન આપ્યું હતું. તેમણે યોગ દિવસ, ઈમરજન્સી, રમતગમત, 2025 સુધીમાં ભારતને ટીબી મુક્ત બનાવવાના અભિયાન વિશે વાત કરી. આ વખતે મને ન્યૂયોર્કમાં સંયુક્ત રાષ્ટ્રના મુખ્યાલયમાં યોગ દિવસના કાર્યક્રમમાં ભાગ લેવાની તક મળશે. જો તમે હજુ પણ યોગ સાથે જોડાયેલા નથી, તો 21 જૂન આ સંકલ્પ માટે ખૂબ જ સારો દિવસ છે.

In *Mann Ki Baat*, PM speaks on Emergency, efforts to eradicate TB

Participation of public will free India of TB: Modi

PM hails Kutch's 'unprecedented' show of courage to fight cyclone

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: Days after cyclone 'Biparjoy' hit the Gujarat coast, PM Narendra Modi on Sunday spoke about the improvement in India's preparedness for disaster management over the years and the spirit of resilience among people in facing and handling such a situation, and said he was sure that the people of Kutch would rapidly emerge from the devastation.

"Just two-three days ago, we saw how big a cyclone hit the western part of the country.. Cyclone Biparjoy caused a lot of destruction in Kutch. But the courage and preparedness with which the people of Kutch fought such a dangerous cyclone is equally unprecedented too," said Modi while addressing his monthly radio programme 'Mann Ki Baat'.

"Kutch was once termed as never to be able to recover after the devastating earthquake two decades ago... Today, the same district is one of the fastest growing districts of the country... No one has any control over natural calamities. But the strength of disaster management that India has developed over the years, is becoming an example today," he added.

The PM emphasised on conservation of nature as a "significant way to combat natural calamities", and cited examples from Uttar Pradesh and Maharashtra where local people worked to conserve water.

On water management issues in the historical context, he also referred to the contribution made by Chhatrapati Shivaji. "Along with the bravery of Chhatrapati Shivaji Maharaj, there is a lot to learn from his governance and management skills. In particular, water management and navy... The Sea-forts built by him still stand proudly in the middle of the sea even after so many centuries. The beginning of this month itself marks the completion of 350 years of the coronation of Chhatrapati Shivaji Maharaj," the Prime Minister said.

جموں وکشمیر کا چرچا ہر سو

મોદીએ બિપોરજોય વાવાઝોડાને લડત આપનાર કચ્છવાસીઓની પ્રશંસા કરી

ഇന്ത്യയുടെ ദുരന്ത നിവാരണ സംവിധാനം ലോകത്തിന് മാതൃക: പ്രധാനമന്ത്രി

കശ്മീരിലെ ധവളവിപ്ലവം വിവരിച്ച് മോദി

पीएम ने ओखलकांडा के डीकर को सराहा

भीमताल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छह टीबी मरीजों को गोद लेने वाले ओखलकांडा ब्लॉक के डीकर सिंह मेवाड़ी के प्रयासों की सराहना की है। रविवार को मन की बात कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने टीबी मुक्त भारत अभियान पर चर्चा करते हुए डीकर सिंह मेवाड़ी जैसे लोगों को प्रेरणा बताया। पीएम से मिली तारीफ से डीकर सिंह काफी उत्साहित हैं।

डीकर सिंह मेवाड़ी (31) नैनीताल जिले के सबसे दूरस्थ ओखलकांडा ब्लॉक के ककोड़ ग्राम सभा के प्रधान हैं। टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत उन्होंने अक्तूबर 2022 में अपने ब्लॉक के छह टीबी मरीजों को गोद लिया। इन मरीजों को डीकर अपनी ओर से हर महीने हाई प्रोटीन डायट उपलब्ध कराते हैं।

लोकमत

आणीबाणी काळा काळ; आठवणीने थरकाप उडतो

तरुणांना लोकशाही कळायला हवी : मोदी

छत्रपती शिवरायांचा उल्लेख...

Hindustan Times

Mann Ki Baat updates: Emergency was 'black day' for India's history, says PM Modi

The Indian EXPRESS

Kerala teacher's green triumph: PM Modi's Mann Ki Baat shines spotlight on Miyawaki forest success

abp न्यूज़

PM Modi Man ki Baat के जरिए देश से अपने विचार करेंगे साझा, मन की बात का 102वां एपिसोड का प्रसारण

THE WIRE

In PM Modi's Latest 'Mann Ki Baat', Valuable Lessons for Manipur's Residents

अमर उजाला

Mann Ki Baat: 'इमरजेंसी, देश के इतिहास का काला दौर', मन की बात कार्यक्रम में पीएम मोदी ने कही बड़ी बात

लोकमत

नरेंद्र मोदींनी मन की बातसोबत मणिपूरची देखील बात करा! पुण्यात मणिपुरी नागरिकांचे आंदोलन

दैनिक जागरण

Mann ki Baat: 'मन की बात' से PM Modi का कांग्रेस पर निशाना, बोले- इमरजेंसी के काले दौर को कोई नहीं भूल सकता

mint

Mann Ki Baat: PM Modi to address 102nd episode today; check time, where to listen and other details

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार